A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 22 जून, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 283, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmailÐcom
facebookÐcom/subahsaverenews
wwwÐsubahsavereÐnews
twitterÐcom/subahsaverenews

विश्व भर में गूंजा 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' का नारा

योगमय हुआ पूरा देश

विशाखापट्टनम से पीएम ने कहा- योग सभी का है और सभी के लिए है

नई दिल्ली (एजेंसी)। विशाखापत्तनम (एजेंसी)। दुनियाभर में शनिवार को 11वां योग दिवस मनाया गया। पीएम मोदी ने विशाखापट्टनम में 3 लाख लोगों और 40 देशों के राजनयिक के साथ योग किया। इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि योग का मतलब होता है-जोड़ना। और ये देखना सुखद है कि कैसे योग ने पूरी दुनिया को जोड़ा है। मोदी ने कहा कि आज जब दुनिया में अशांति, तनाव और अस्थिरता बढ़ रही है, तो योग शांति की दिशा दिखाता है। यह पॉज बटन जैसा। पीएम के साथ आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने भी योग किया। इस बार की योग की थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग है। इंडियन काउंसिल फॉर कल्चर रिलेशन्स के मुताबिक, 191 देशों में 1,300 जगहों पर 2,000 से ज्यादा योग कार्यक्रम हुए। पीएम मोदी ने कहा- आज योग करोड़ों लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुका है। मुझे गर्व होता है जब मैं देखता हूं कि हमारे दिव्यांग साथी ब्रेल में योग शास्त्र पढ़ते हैं। वैज्ञानिक अंतरिक्ष में योग करते हैं। गांव-गांव में युवा साथी योग ओलिंपियाड में भाग लेते हैं। नेवी के जहाज में भी योगा हुआ। योग दिवस पर विश्व भर में गूंजा 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' का नारा। ब्रिटेन, यूएस, चीन में योग दिवस मनाया।

14 हजार फीट की ऊंचाई पर भी रही योग की धूम

अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर आईटीबीपी के जवानों ने पैंगोंग त्सो के तट पर 14,100-14,200 फीट की ऊंचाई पर स्थित बीओपी धन सिंह थापा और चार्ल्स (24 बटालियन, लेह) पर योग किया। आज यानी 21 जून को ही महाराष्ट्र की बड़ी

राजनीतिक पार्टियों में से एक शिवसेना का विभाजन हुआ था। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा, 21 जून को ही हमने बड़ा योग किया था। वो मैराथन योग था। उस योग की शुरुआत मुंबई से हुई और उसी की वजह से 21 जून को महाराष्ट्र में काफी बदलाव आया है, हम यहां विकास देख रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने डोंगला में अत्याधुनिक तारामंडल का किया लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को डोंगला में अत्याधुनिक वराहमिहिर तारामंडल का लोकार्पण किया। इस आधुनिक तारामंडल मे खगोल विज्ञान के रहस्यो के बारे मे डोंगला आने वाले बच्चो और अगुंतको को 4द्म फिल्म के माध्यम से जानकारी दी जायेगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वराहमिहिर वेधशाला तारामंडल मे बच्चों के साथ बैठकर सूर्य विकिरण और उसके तरंगों के अध्ययन पर आधारित फिल्म को भी देखा। उल्लेखनीय है कि आचार्य वराहमिहिर न्यास द्वारा अवादा फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग एवं डीप स्काई प्लेनेटेरियम, कोलकाता के तकनीकी सहयोग से डोंगला में अत्याधुनिक डिजीटल तारामंडल की स्थापना की गई है।तारामंडल में डिजीटल प्रोजेक्टर एवं डिजीटल साउण्ड सिस्टम लगाया गया हैं। इस वातानुकूलित गोलाकार तारामण्डल में 55 लोग एक साथ बैठकर रोमांचक अनुभव ले सकेंगे। इस तारामण्डल की लागत लगभग 1.6 करोड़ रूपये हैं।

मुख्यमंत्री बने शिक्षक,शंकु यंत्र पर परछाई परिचालन व्यवस्था में शून्य होती परछाई को देखा सूर्य परिचालन समझाया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 21 जून को होने वाली अद्भुत खगोलीय घटना डोंगला स्थित वराहमिहिर खगोलीय वेधशाला में देखी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शंकु यंत्र पर परछाई परिचालन व्यवस्था में शून्य होती परछाई को देखा और उपस्थित सभी को सूर्य परिचालन से समय परिवर्तन और काल गणना को भी समझाया। उन्होंने शिक्षक के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसार खगोलीय विज्ञान की जानकारी सभी उपस्थित गणमान्य नागरिकों और जनप्रतिनिधियों को समझाई।इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, सांसद श्री अनिल फिरोजिया, जनप्रतिनिधि श्री राजेश धाकड़, श्री बहादुर सिंह चौहान, महानिदेशक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद डॉ. अनिल कोठारी, अपर मुख्य सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी श्री संजय दुबे, श्री शिवकुमार शर्मा सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शंकु यंत्र

क्षितिज वृत्त के धरातल पर निर्मित इस चबूतरे के मध्य में एक शंकु लगा हुआ है, जिसकी छाया से सूर्य का वेग लिया जाता है। इस गोल चबूतरे पर तीन रेखाएँ खींची हैं, जो सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायण की विभिन्न स्थितियों को दर्शाती हैं। सूर्य उत्तरायण के अन्तिम बिन्दु (राजून) पर जब होता है तब डोंगला में विशेष खगोलीय घटना होती है। दोपहर में 12ञ्28 बजे शंकु की छाया लुप्त हो जाती है। इस घटना में यह सिद्ध होता है कि सूर्य की उत्तर परम क्रान्ति (23-26 प्रतिशत) व डोंगला के अक्षांश समान हैं। इस दिन (राजून) दिनमान सबसे बड़ा होता है। तत्पश्चात् सूर्य दक्षिणायण की ओर गमन करने लगता है व दिनमान क्रमशः छोटा होने लगता है। इसी क्रम में जब सूर्य वृत्त (23 सेप्टेम्बर) पर होता है तो दिन-रात बराबर हो जाते हैं। दक्षिणायण के अन्तिम बिन्दु (मकर रेखा) पर सूर्य आ जाने की स्थिति में इस मन्त्र पर स्थापित शंकु की छाया सबसे लम्बी दिखाई देती है और दिनमान सबसे छोटा (22 दिसम्बर) होता है। पुनः अगले दिन से उत्तरायण आरम्भ होकर क्रमशः दिनमान तिल-तिल मात्रा में बड़ा होने लगता है। उत्तरायण के मध्य बिन्दु (22 मार्च) पर सूर्य विषुवद् वृत्त पर होकर पुनः दिन-रात बराबर हो जाते हैं और यही समय मेष संक्रान्ति भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ का समय है।

सुप्रभात

ओ पेड़!
मैंने तुम्हें जब-जब देखा
तो ऐसा लगा कि
जैसे तुम मेरे अपने हो, सगे हो
मैं तुमसे ही हूँ, मुझमें तुम ही पगे हो
मसलन जब मैंने तुम्हारी छाल को देखा
तो लगा कि जैसे
देख लिए हों पिता के गाँठ भरे हाथ
और मैं भर गया स्नेहिल जिम्मेदारियों से

जब मैंने तुम्हारे फलों को देखा
तो लगा कि जैसे
देख लिए हों माँ के स्तन
और मैं भर गया एक परिचित तृप्ति से

जब मैंने तुम्हारे नव-कलोलों को देखा
तो लगा कि जैसे
देख ली हों संतान की आँखें
और मैं भर गया एक गहन आश्वस्ति से
जब मैंने तुम्हारी पत्तियों को देखा
तो लगा कि जैसे
देख रहा हूँ नानी के हाथ
और मैं भर गया स्निग्ध दुआओं से
जब मैंने तुम्हारे फूलों को देखा
तो लगा कि जैसे
देख ली हों प्रेमिका की आँखें
और मैं भर गया अभूतपूर्व संतुष्टि से

जब मैंने तुम्हारी जड़ों को देखा
तो लगा कि जैसे
देख ली हो किसी पुरखे की पीठ
और मैं भर गया असीम कृतज्ञता से

सुनो मेरे आदिम पुरखे!
सुनो पेड़
मैंने तुम्हें जब-जब देखा
तो ऐसा लगा कि जैसे
मैं अपना बाप, माई, बहन, भाई देख रहा हूँ-
कि जैसे मैं पहला मनुष्य देख रहा हूँ।

- अजय दुर्ज्ञेय

इजराइल ने ईरानी सेना के 3 कमांडरों को मारा

- ईरान की इस्फहान न्यूक्लियर साइट पर भी हमला
- ट्रम्प बोले-इजराइल जीत रहा

तेहरान/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल-ईरान के बीच जारी संघर्ष का आज 9वां दिन है। इजराइली सेना ने शनिवार को ईरानी सेना के 3 कमांडरों को मारने का दावा किया है। इनमें ड्रोन यूनिट, कुद्स फोर्स और फिलिस्तीनी मामलों से जुड़े अधिकारी शामिल हैं। इजराइल ने ईरानी शहरों- खोरमाबाद, कोम, इस्फहान पर भी मिसाइलें दागीं। इसमें 5 लोगों की मौत और 4 घायल हो गए। वहीं, ईरान ने शनिवार सुबह इजराइल में तेल अवीव समेत दूसरे शहरों पर मिसाइल हमले किए।

हालांकि, इनमें कोई हताहत नहीं हुआ। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि वे इजराइल को जंग रोकने के लिए नहीं कहेंगे। फिलहाल इजराइल जंग में आगे है। इस वजह से उसे रोकना मुश्किल है। इजराइल ने 13 जून की सुबह ईरान पर सबसे पहले हमला किया था। बीते 8 दिनों में ईरान में अब तक 657 लोगों की मौत हुई है और 2000 से ज्यादा घायल हैं। इजराइल में 24 लोग मारे गए हैं, जबकि 900 से ज्यादा घायल हुए हैं।

मप्र में छोड़े जाएंगे किंग कोबरा! गिना जाएगा एक-एक सांप

- सांपों के काटने से होने वाली मौतों को कम करने का है प्लान
- मोहन सरकार की योजना पर वैज्ञानिकों ने दी है बड़ी चेतावनी

भोपाल (एजेंसी)। किंग कोबरा...दुनिया के सबसे खतरनाक और जहरीले सांपों में से एक। 15 फीट तक लंबे इस सांप का जहर इतना शक्तिशाली होता है कि हाथी जैसे विशालकाय जानवर को भी मार सकता है। किंग कोबरा का जहर न्यूरोटॉक्सिक होता है, जो सीधे तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है। इसके काटने से इंसान की मौत कुछ ही मिनटों में हो सकती है। कहते हैं कि अगर कहीं किंग कोबरा दिख जाए तो दूर से ही बचकर निकल जाना चाहिए। लेकिन, एक राज्य ऐसा है जो बड़ी संख्या में किंग कोबरा सांपों को मंगा रहा है। ये राज्य है मध्य प्रदेश, जहां के मुख्यमंत्री मोहन यादव अपने प्रदेश में किंग कोबरा सांपों को लाने की योजना बना रहे हैं। दरअसल, इसकी वजह है राज्य में सांपों के काटने से होने वाली मौतें। इन मौतों को कम करने के लिए सीएम मोहन यादव राज्य में कर्नाटक से किंग कोबरा सांप लाना चाहते हैं। इसके साथ ही वह राज्य में सांपों की गिनती भी कराना चाहते हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है। दरअसल, मुख्यमंत्री मोहन यादव सांपों की

आबादी का आंकलन करना चाहते हैं, लेकिन वन्यजीव विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा करने के लिए कोई प्रोटोकॉल नहीं है।

किंग कोबरा देखे जाने का मजबूत रिकॉर्ड नहीं- एक पूर्व वरिष्ठ राज्य वन अधिकारी का कहना है कि मध्य प्रदेश के जंगलों में किंग कोबरा को देखे जाने का कोई मजबूत रिकॉर्ड नहीं है। उन्होंने कहा कि उनके पास पर्याप्त बारहमासी पानी के स्रोत या घनी वनस्पति के फैले हुए इलाके भी नहीं हैं, जो गर्मियों में ठंडी जगह प्रदान कर सकें। कभी-कभार किनारे पर आबादी हो सकती है लेकिन इससे मध्य प्रदेश किंग कोबरा के क्षेत्र में नहीं आता है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने वन अधिकारियों को बताया, जब किंग कोबरा जमीन पर रेंगता है, तो दूसरे सांप अपने बिलों से भाग जाते हैं और किंग कोबरा उनका शिकार करता है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 22 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

आधी रात को शूट किया वीडियो, शाह को दी जानकारी

● जस्टिस यशवंत वर्मा कैश कांड मामले में बड़ा खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस वर्मा के घर कैश मिलने के मामले में अहम जानकारी सामने आई है। दिल्ली पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा ने सबसे पहले गृह मंत्री अमित शाह को जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी आवास पर नकदी की 'चार या पांच आधी जली हुई बोरियों' के बारे में सूचित किया था। ये कैश 14 मार्च की रात बंगले के स्टोररूम में आग लगने के बाद संयोग से मिली थीं। आग की इमरजेंसी कॉल का जवाब देते हुए, अग्निशमन विभाग और पुलिस 14 मार्च को रात 11.30 बजे के कुछ समय बाद न्यायमूर्ति वर्मा के तुगलक क्रिसेंट बंगले पर पहुंची। सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वालों ने, जो नकदी से भरे बैगों को देखकर चौंक गए, आधी रात के आसपास 500 रुपये के आधे जले हुए नोटों का वीडियो शूट किया। वे 15 मार्च को लगभग 1 बजे आग बुझाने के बाद चले गए।

शाह के बाद हाई कोर्ट चीफ जस्टिस को सूचना- दिल्ली पुलिस प्रमुख अरोड़ा ने सबसे पहले 15 मार्च को गृह मंत्री को सूचित किया। बाद में दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डी के उपाध्याय को नकदी के बारे में जानकारी दी। दिल्ली पुलिस प्रमुख संजय अरोड़ा ने स्टोर रूम में लगी आग की कुछ तस्वीरें और वीडियो भी दिल्ली हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को शेयर की थी। चीफ जस्टिस ने तत्कालीन सीजेआई संजीव खन्ना को इसकी जानकारी दी। इसके बाद घटनाओं की एक सीरिज शुरू हुई और इस सनसनीखेज प्रकरण की जांच शुरू हुई। जांच पैनल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा ने 15 मार्च की दोपहर में जस्टिस डी के उपाध्याय के साथ जानकारी साझा की, जो होली की छुट्टी के कारण लखनऊ में थे। उन्हें बताया गया कि केंद्रीय गृह मंत्री को एक रिपोर्ट भेजी गई थी, जिसमें संदर्भ था कि घटनास्थल पर भारतीय मुद्रा की चार या पांच आधी जली हुई बोरियां थीं। पंजाब और हरियाणा के चीफ जस्टिस शील नागू, हिमाचल प्रदेश के चीफ जस्टिस जी एस संधावालिया और कर्नाटक हाईकोर्ट की जस्टिस अनु शिवरामन की सदस्यता वाले जांच पैनल ने पहले उत्तरदाताओं से संबंधित 10 फोन भेजे थे। इनका इस्तेमाल स्टोररूम में जलती हुई नकदी की वीडियो और स्थिर तस्वीरें लेने के लिए किया गया था। इन्हें केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (सीएफएसएल), चंडीगढ़ द्वारा प्रमाणीकरण के लिए भेजा गया था। सीएफएसएल ने फोटो और वीडियो को सर्टिफाई किया है।

सिंधु जल संधि अब कभी भी नहीं होगी बहाल: शाह

● भारत का पाक को संदेश,कहा-राजस्थान की ओर मोड़ेंगे पानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत कभी भी पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि को बहाल नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को 'अनुचित रूप से' मिल रहा पानी अब भारत में इस्तेमाल किया जाएगा, और विशेष रूप से इसे राजस्थान जैसे राज्यों तक पहुंचाने के लिए एक नहर का निर्माण किया जाएगा। गौरतलब है कि भारत ने 1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता में पाकिस्तान के साथ यह संधि की थी, जिसके तहत भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु नदी प्रणाली के जल का बंटवारा हुआ था। यह संधि पाकिस्तान की 80 फीसदी कृषि भूमि के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित करती थी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में एक आतंकवादी हमले में 26 आम नागरिकों की हत्या के बाद भारत ने संधि को ''स्थगित' कर दिया था। भारत ने इस हमले को पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद करार दिया था। एक इंटरव्यू में अमित शाह ने कहा, नहीं, यह (संधि) कभी बहाल नहीं की जाएगी। अंतर्राष्ट्रीय संधियों को एकतरफा तरीके से रद्द नहीं किया जा सकता है, लेकिन हमें इसे स्थगित करने का अधिकार था, जो हमने किया है। संधि की प्रस्तावना में उल्लेख किया गया है कि यह दोनों देशों की शांति और प्रगति के लिए थी, लेकिन एक बार इसका उल्लंघन हो जाने के बाद, फिर कुछ भी नहीं बचा। उन्होंने कहा, जो पानी अब तक पाकिस्तान को मिल रहा था, हम उसे भारत के भीतर मोड़ेंगे। हम नहर बनाकर पाकिस्तान में बह रहे पानी को राजस्थान में ले आएंगे।

'एक पृथ्वी-एक स्वास्थ्य के लिए योग' की थीम पर मना 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

भारत के मूलदर्शन और योगशैली से दुनिया को परिचय कराने का दिन है अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस:मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर हुए राष्ट्रीय कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़ते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल के अटल पथ पर राज्य स्तरीय 'योग संगम' सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम को संबोधित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर स्वस्थ एवं निरोगी काया के लिए प्रतिभागियों के साथ योगाभ्यास भी किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संबोधन का इस अवसर पर सजीव प्रसारण किया गया। राष्ट्रीय कार्यक्रम से प्रसारित कॉमन योग प्रोटोकॉल का अनुसरण करते हुए अटल पथ पर बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों और जनसामान्य ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में योग किया। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके, सांसद श्री वी.डी. शर्मा तथा श्री आलोक शर्मा उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विशाखापत्तनम् में योगांध्र कार्यक्रम में कहा कि योग का अर्थ है जोड़ना। योग ने बीते एक दशक में दुनिया को जोड़ा है। भारत ने जब संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देने के लिए प्रस्ताव रखा तो 175 देश भारत के प्रस्ताव के साथ खड़े थे। वर्तमान दौर में ऐसा अभूतपूर्व समर्थन सामान्य नहीं है। यह सिर्फ समर्थन नहीं, बल्कि यह दुनिया की भलाई के लिए एक प्रयास था। आज दुनियाभर में करोड़ों लोगों के लिए योग जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। योग सभी के लिए है और सभी का है। उम्र और अन्य सभी सीमाएं तोड़ते हुए यह उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है। योग का समाज में सोशल प्रमोशन कैसे हो सकता है, इसे योगांध्र अभियान की सफलता से समझा जा सकता है। इस वर्ष एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग की थीम है। योग हमारे लिए वसुधैव कुटुंबकम के मार्ग पर चलते हुए दुनिया को एक मंच पर लाने का माध्यम है। यह मैं से ऊपर उठकर हम की यात्रा है, समर्पण, सेवा और सहअस्तित्व का भाव है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि दुनिया के कई क्षेत्रों में अशांति का दौर है, लेकिन योग से हमें शांति मिलती है। विश्व समुदाय से अनुरोध है कि योग को ग्लोबल पार्टनरशिप का माध्यम बनाएं। आज योग की वैज्ञानिकता को आधुनिक चिकित्सा पद्धति में स्थान दिलाने के लिए प्रयास जारी हैं। योग को आगे बढ़ाने में डिजिटल टेक्नोलॉजी ने भी अहम भूमिका निभाई है। आज हील इन इंडिया का मंत्र दुनिया में प्रसिद्ध हो रहा है और इसमें भी योग की बड़ी भूमिका है। देशभर में आयुष्मान योग मंदिरों में प्रशिक्षित योग टीचर तैनात किए जा रहे हैं। हमारा प्रयास दुनिया को योग का फायदा देने का है। बढ़ता मोटापा दुनिया के लिए बड़ी चुनौती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने योग दिवस पर देशवासियों और दुनिया के लोगों से मोटापा घटाने के लिए संकल्प लेने का आह्वान करते हुए कहा कि कम तेल वाला भोजन करने के साथ योग को स्वस्थ्य जीवनशैली का माध्यम बनाना जरूरी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ आगे बढ़ रहा है। हमारे लिए विश्व एक परिवार है, और विश्व योग दिवस का अवसर दुनिया को भारत के मूलदर्शन और योगशैली से परिचय कराने का दिन है। योगाभ्यास करने से मन शांत होता है, शांति से संतोष आता है और जब मन में संतोष हो तो मनुष्य अहिंसा की तरफ बढ़ता है। योग, शारीरिक बल और मानसिक शांति व प्रफुल्लता बढ़ाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अष्टांग योग दर्शन के रचयिता महर्षि पतंजलि को प्रणाम कर, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए मानवता को योग का वरदान देने के लिए उनका आभार माना।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 21 जून का दिन खगोलीय गणना की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। आज के दिन भगवान सूर्यनारायण उत्तरायण की यात्रा पूरी कर दक्षिणायन में प्रवेश करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने योग के माध्यम से भारत के मूल दर्शन और जीवन शैली से विश्व को परिचित कराया है। समूची वंसुधरा को परिवार मानते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कोविड के दौर में देश के लोगों को बचाने के साथ-साथ दुनिया के 100 से अधिक देशों को आवश्यक सहायता उपलब्ध करा कर लोगों की जान बचाई।

एयर इंडिया पर डीजीसीए का सख्त ऐक्शन शुरू

● कहा-तीन सीनियर अधिकारियों को तुरंत हटाओ

नई दिल्ली (एजेंसी)। बार-बार फ्लाइट के गड़बड़ी के चलते एयर इंडिया पर ऐक्शन हो गया है। यह ऐक्शन डीजीसीए ने क्रू शेड्यूलिंग में गड़बड़ी के चलते लिया है। डीजीसीए ने एयर इंडिया को अपने तीन सीनियर अधिकारियों को तुरंत हटाने का आदेश दिया है। ये अधिकारी रोस्टरिंग विभाग में काम कर रहे थे। एयरलाइन ने कहा है कि उसे डीजीसीए का आदेश मिल गया है और उसे लागू कर दिया गया है। डीजीसीए ने एयर इंडिया को कहा है कि वह तीनों अधिकारियों को क्रू शेड्यूलिंग से जुड़े सभी कामों से हटा दे। डीजीसीए के अनुसार, ये तीनों अधिकारी कई गलत कामों में शामिल थे। इनमें बिना अनुमति के क्रू की जोड़ी बनाना, लाइसेंस नियमों का उल्लंघन करना और फ्लाइट क्रू की ट्रेनिंग पूरी न करना शामिल है। डीजीसीए ने इसे शेड्यूलिंग और निगरानी में सिस्टम की विफलता बताया है। एयर इंडिया के एक प्रवक्ता ने कहा कि फिलहाल कंपनी के चीफ ऑपरेशंस ऑफीसर सीधे इंटीग्रेटेड ऑपरेशंस कंट्रोल सेंटर की निगरानी करेंगे।

6 जिलों में ऑरेंज, 49 में यलो अलर्ट

रीवा संभाग में गिर सकता है 8 इंच पानी ; भोपाल-इंदौर में भी होगी बारिश

भोपाल (नप्र)। मानसूनी बारिश ने पूरे मध्यप्रदेश को तरबतर कर दिया है। नदी-नाले उफान पर होने से कई रास्ते बंद हो गए हैं। गुना के फतहगढ़ में शनिवार सुबह नदी पार कर रहा ट्रैक्टर और एक बाइक बह गई। इनमें सवार 4 लोग भी बह गए। रतलाम में सुबह से बारिश जारी है, इससे शहर का हनमान ताल भर गया है।

इससे पहले शुक्रवार को 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। शिवपुरी में उफनती पुलिया पार कर रहा ट्रैक्टर बह गया। गनीमत रही कि ट्रैक्टर सवार चार लोगों को बचा लिया गया। धार जिले के मांडू की खुद नदी में एक युवक डूब गया। वहीं, ग्वालियर में सड़क ही धंस गई।

ऐसा ही मौसम अगले 24 घंटे यानी शनिवार को भी बना रहेगा। मौसम विभाग ने पूर्वी हिस्से के जिले- सतना, मैहर, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। यहां अगले 24 घंटे में 4 से 8 इंच तक पानी गिर सकता है।

ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना में भारी बारिश होने की संभावना है। वहीं, भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर समेत प्रदेश के अन्य जिलों में यलो अलर्ट है।

30 जिलों में बारिश, गुना में सबसे ज्यादा ढाई इंच पानी गिरा

मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे में 30 से अधिक जिलों में बारिश हुई। इनमें सबसे ज्यादा गुना में ढाई इंच पानी गिर गया। शिवपुरी में 1.8 इंच, टीकमगढ़ में 1.7 इंच, धार-उमरिया में 1-1 इंच बारिश हुई। वहीं, मऊगंज, निवाड़ी, सीहोर, नर्मदापुरम, पन्ना, सीहोर, नरसिंहपुर, सिवनी, सागर, बालाघाट, मंडला, बैतूल, छिंदवाड़ा, सीधी, रायसेन, रीवा, दमोह, जबलपुर, सतना, छतरपुर, ग्वालियर, इंदौर में भी बारिश का दौर चला। भोपाल में हल्की बूंदा-बांदी हुई।

अब एयरलिफ्ट कराया जाएगा ब्रिटेन का लड़ाकू विमान

● 14 जून से केरल में है खड़ा, हाइड्रोलिक में आई है खराबी

तिरुअनंतपुरम (एजेंसी)। एक हफ्ते पहले केरल के तिरुअनंतपुरम हवाई अड्डे पर आपात लैंडिंग करने वाले ब्रिटिश रायल नेवी के एफ-35बी लड़ाकू विमान में अब हाइड्रोलिक खराबी आ गई है। रक्षा अधिकारियों के अनुसार, इसे संभवतः एक सैन्य परिवहन विमान से वापस ब्रिटेन ले जाया जाएगा। अधिकारियों के अनुसार विमान को पुनर्प्राप्त करने के लिए एक बड़ा रखरखाव दल आने की उम्मीद है और यदि आवश्यक हुआ, तो इसे सैन्य परिवहन विमान से वापस ले जाया जा सकता है। भारतीय वायुसेना विमान की समस्या को ठीक करने और इसके बाद की वापसी के लिए सभी आवश्यक सहायता प्रदान कर रही है।

● मोदी सरकार की 'विदेश नीति' पर जमकर बरसीं सोनिया

पूछा-गाजा में तबाही और अब ईरान के खिलाफ चुप्पी क्यों

● कहा-पश्चिम एशिया पर भारत के सैद्धांतिक रुख को त्यागा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने शनिवार को मोदी सरकार पर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने गाजा की स्थिति और इजराइल-ईरान सैन्य संघर्ष पर चुप्पी साधते हुए भारत के नैतिक और पारंपरिक रुख से दूरी बना ली है।

मूल्यों को भी ताक पर रख दिया है। सरकार को बोलना चाहिए और पश्चिम एशिया में संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए उपलब्ध हर राजनयिक माध्यम का उपयोग करना चाहिए। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने अंग्रेजी अखबार के लिए लिखे एक लेख में आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने इजराइल और फलस्तीन के रूप में दो राष्ट्र वाले समाधान से जुड़े भारत के सैद्धांतिक रुख को त्याग दिया है। सोनिया गांधी ने लेख में कहा कि ईरान भारत का लंबे समय से मित्र रहा है। गहरे सभ्यतागत संबंधों से हमारे साथ जुड़ा हुआ है। इसका जम्मू-कश्मीर समेत महत्वपूर्ण मौकों पर दृढ़ समर्थन का इतिहास रहा है। उन्होंने उल्लेख किया कि वर्ष 1994 में ईरान ने कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत की आलोचना करने वाले एक प्रस्ताव को रोकने में मदद की थी।

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि वास्तव में इस्लामी गणतंत्र ईरान अपने पूर्ववर्ती ईरान के शाह शासन की तुलना में भारत के साथ कहीं अधिक सहयोगी रहा है, जिसका झुकाव 1965 और 1971 के युद्धों में पाकिस्तान की ओर था। उन्होंने यह भी कहा कि भारत और इजराइल ने हाल के दशकों में रणनीतिक संबंध भी विकसित किए हैं।

यह अद्वितीय स्थिति हमारे देश को तनाव कम करने और शांति के लिए एक सेतु के रूप में कार्य करने की नैतिक जिम्मेदारी और राजनयिक अवसर देती है। बता दें कि उनके अनुसार, लाखों भारतीय नागरिक पूरे पश्चिम एशिया में रह रहे हैं और काम कर रहे हैं, जो इस क्षेत्र में शांति को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित का मुद्दा बनाता है।

● बिहार चुनाव से पहले नीतिश ने चला बड़ा दांव

बुजुर्ग,विधवा और दिव्यांगों की तीन गुना बढ़ाई पेंशन

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने महिला संवाद के मौके पर बड़ा ऐलान किया है। राज्य में सभी प्रकार के सामाजिक सुरक्षा पेंशन में भारी बढ़ोतरी की गयी है। बुजुर्गों के साथ सभी कोटि के लाभूकों को अब 400 के बदले 1100 रुपए प्रति माह मिलेंगे। हर माह की दस तारीख को इसका भुगतान कर दिया जाएगा। सोशल मीडिया पर पोस्ट पर पोस्ट कर सीएम ने इसकी जनकारी दी है। बिहार में लंबे समय से इसकी मांग की जा रही थी। जुलाई महीने से नए दर से पेंशन का भुगतान शुरू हो जाएगा। जीविका दीदियों को भी अब समूह लोन के तौर पर तीन लाख की जगह पांच लाख तक की राशि दी जाएगी। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने सरकार बनने पर इसे 1500 तो प्रशांत किशोर ने 2000 करने का ऐलान किया था। नीतिश कुमार ने फेसबुक पर पोस्ट किया है कि यह बताते हुए खुशी हो रही है कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत विधवा महिलाओं, वृद्धजनों और दिव्यांगजनों को अब हर महीने 400 रु की जगह 1100 रु पेंशन मिलेगी। सभी लाभार्थियों को जुलाई महीने से पेंशन बढ़ी हुई दर पर मिलेगी। सभी लाभार्थियों के खाते में यह राशि महीने की 10 तारीख को भेजना सुनिश्चित किया जाएगा। सीएम ने कहा है कि वृद्धजन समाज का अनमोल हिस्सा हैं और उनका सम्मानजनक जीवन-यापन सुनिश्चित करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

परिक्रमा

सत्ता की कुर्सी की मदहोशी न छा पाए

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

भाजपा ने मध्यप्रदेश के विधायकों व सांसदों के प्रशिक्षण शिविर में, जो कि पचमढ़ी की मन-मोहिनी वादियों में आयोजित किया गया था, में जनप्रतिनिधियों को अनावश्यक विवादों से बचने की सीख दी गई और साथ ही यह भी बताया गया कि उन्हें अपना आचरण और व्यवहार कैसा रखना है। प्रशिक्षण शिविर का आगाज करते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शिविर में अहंकार त्यागने की सीख दी तो वहीं समापन करते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि सत्ता की कुर्सी चूंकि सेवा की चौकी है इसलिए इसकी मदहोशी नहीं छाना चाहिए। आपरेशन सिंदूर के बाद मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा तथा मंत्री विजय शाह सहित कुछ अन्य नेताओं के कथित विवादास्पद बयानों के बाद पार्टी ने यह प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था। अमित शाह का कहना था कि अहंकार त्याग कर विधायक और सांसद जनता के लिए काम करें, लम्बे समय तक बड़े पदों पर रहने के कारण अहंकार आ ही जाता है और यही पतन की ओर ले जाता है, इसलिए स्वयं को सामान्य कार्यकर्ता समझ कर अपना मन और विचार साफ रखें। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रशिक्षण शिविर में इस बात पर जोर दिया कि सरकार के कामों का श्रेय लें और जल्दबाजी में भूमिपूजन न करें। भाजपा सरकार ने 2003 में सत्ता में आने के बाद विकास की धारा महानगरों से निकाल कर जिलों तक पहुंचाई है जबकि पहले सिर्फ इंदौर और भोपाल जैसे महानगरों में ही विकास होता था।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि राजनीति तो तुच्छ चीज होती है और इसका कभी घमंड नहीं करना चाहिए। कुर्सी आज आपके पास है कल किसी और के पास होगी। एक बात हमेशा ध्यान रखें कि सत्ता की कुर्सी जनता की सेवा की चौकी होती है जिसकी मदहोशी नहीं होना चाहिए। यह संसार एक कांच जैसा है, यदि आप किसी को सम्मान दोगे तो आपको भी

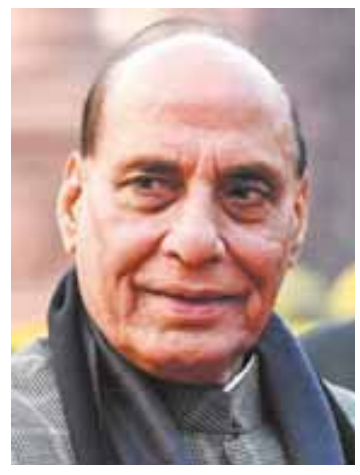

उतना ही सम्मान मिलेगा। ज्यादा समय तक सत्ता में रहने से जनप्रतिनिधि जमीनी पकड़ से दूर होने लगते हैं जबकि हमें जमीनी पकड़ बनाये रखना है। राजनाथ ने यह सीख भी दी कि जनता से प्रेम करना है और संगठन को सर्वोपरि समझना है। नए परिप्रेक्ष्य में समय तेजी से बदल रहा है इसलिए बदलते परिवेश में नई चुनौतियों के हिसाब से खुद को तैयार करना जरुरी है। हम चाहें किसी भी पद पर हों हमें कार्यकर्ता बनकर ही काम करना चाहिए, क्योंकि हम जनसेवक हैं शासक नहीं, जनता से जुड़ाव रहे, ईमानदारी से रहो और कर्तव्य का पालन करो। अहंकार पार्टी, परिवार और व्यक्तित्व का विनाश करता है। राजनाथ का कहना था कि जनता की सेवा हमारे डीएनए में है, जनता का भरोसा जीतें और हर संकट के समय सबसे पहले जनता के बीच पहुंचें। हमारा उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं बल्कि जनता की सेवा है। इसीलिए हमने कभी अपने विचारों से समझौता नहीं किया। भाजपा की यात्रा में तीन चीजें कभी नहीं बदली हैं और वे हैं- प्रशिक्षण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और गरीब का कल्याण।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बात पर जोर दिया कि यह वर्ग राष्ट्र निर्माण के लिए, व्यक्ति निर्माण के लिए हमारी परम्परा का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार विकास का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही है। भाजपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह का कहना था कि भाजपा का विकास और विस्तार कार्यकर्ताओं की पीढ़ियों के परिश्रम और पुण्य का प्रतिफल है। भाजपा की विचारधारा चुनाव जीतने की दृष्टि से गढ़ी गई रणनीति नहीं अपितु राष्ट्र निर्माण करने वाले विचारों की श्रृंखला है। जनसंघ से लेकर भाजपा तक हमारी विचारधारा बदली है न कार्य संस्कृति। पंच निष्ठा हमारे वैचारिक अधिष्ठान हैं इस पर चल कर ही हम आगे बढ़ रहे हैं।

और यह भी

पिछले विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में भाजपा की शानदार जीत की इबारत लिखने में महती भूमिका अदा करने वाली तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की %लाडली बहना योजना% में अब दीपावली से 1500 रुपये मिलेंगे। डॉ. मोहन यादव ने इसके साथ ही यह भी घोषणा की है कि इस योजना की राशि बढ़ाकर प्रतिमाह 3000 रुपये तक करना हमारे संकल्प-पत्र का वादा है और डंके की चोट पर इसे पूरा करेंगे। विधानसभा चुनाव के पूर्व बहनों को 1000 रुपये प्रतिमाह मिलते थे, फिर 1250 रुपये किये गये और अब हम बहनों को 250 रुपये अतिरिक्त देंगे, जिससे कि दीपावली से बहनों को हर माह 1500 रुपये मिलेंगे। इस प्रकार महिलाओं से किये गये वायदे को पूरा करने की दिशा में भाजपा सरकार आगे बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि आम चुनाव से पूर्व ही पार्टी ने यह वादा किया था कि यह राशि बढ़ाकर 3000 रुपयए प्रतिमाह की जायेगी। इस प्रकार भाजपा सरकार ने आधी आबादी का दिल जीतने की पक्की पेशबंदी कर दी है।

राजभवन में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम

राज्यपाल पटेल के नेतृत्व में राजभवन में हुआ सामूहिक योगाभ्यास

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर राजभवन में सामूहिक योगाभ्यास का नेतृत्व किया। राज्यपाल श्री पटेल के साथ करीब 150 प्रतिभागी सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में शामिल हुए। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम राजभवन के सांदीपनि सभागार मे हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 'एक पृथ्वी-एक स्वास्थ्य' थीम पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के विशाखापटनम कार्यक्रम का लाईव प्रसारण भी किया गया।योगाभ्यास कार्यक्रम में राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता भी मौजूद थे।

योग के विभिन्न आसनों का हुआ अभ्यास

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में योग के विभिन्न आसनों, प्राणायाम, और ध्यान क्रियाओं का अभ्यास किया। मुख्य रूप से ग्रीवा चालन, स्कंध संचालन, ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, कटिचक्रासन, दण्डासन, वज्रासन, तितली आसन, उष्ट्रासन, शशांकासन, उत्तानमंडूकासन, वक्रासन, मकरासन, सेतुबंध आसन, उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन और शवासन किए। आसनों के बाद कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, आदि प्राणायाम किए। क्लैपिंग एवं लाफिंग थेरेपी के साथ सामूहिक योग कार्यक्रम का समापन हुआ।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल का अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम के प्रारंभ में पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया गया। राज्यपाल श्री पटेल ने कार्यक्रम के अंत में योग गुरू श्री राजीव जैन को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

उपमुख्यमंत्री देवड़ा के मुख्य आतिथ्य में हुआ देवास में सामूहिक योग कार्यक्रम

योग मन की शांति, बुद्धि एवं सकारात्मक ऊर्जा के लिये आवश्यक

भोपाल (नप्र)। उपमुख्यमंत्री एवं देवास जिले के प्रभारी मंत्री जगदीश देवड़ा के मुख्य आतिथ्य में 11 वाँ अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री देवड़ा ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला स्तरीय सामूहिक योग कार्यक्रम श्रीमंत तुकोजीराव पवार स्टेडियम में जनप्रतिनिधिगण , सामाजिक संगठनों, विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान, स्वयंसेवी संस्थाएं, छात्र-छात्राओं और अधिकारियों के साथ योग किया।

उपमुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कार्यक्रम का लाईव प्रसारण भी देखा गया। प्रभारी मंत्री श्री देवड़ा ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण भी किया।

प्रभारी मंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि आज एक साथ पूरा विश्व योग कर रहा है। योग से शरीर के साथ मन भी स्वस्थ रहता है। ''एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग'' की थीम पर इस वर्ष योग दिवस मनाया जा रहा है।उन्होंने सभी को योग दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि केवल एक दिन नहीं प्रतिदिन योग करें,यदि आप नियमित रूप से योग करते हैं तो शरीर में ऊर्जा का संचार होगा। योगाभ्यास शरीर को स्वस्थ बनाता है, क्योंकि यह हमें रोगों से लड़ने की शक्ति देता है। योग मन की शांति, बुद्धि एवं शरीर के लिये और सकारात्मक ऊर्जा के लिये आवश्यक है।

कार्यक्रम में योग गुरू श्री राजेश बैरागी ने मंच पर योग का प्रदर्शन किया। उनके साथ-साथ उपस्थित अतिथियों एवं अन्य लोगों ने योग के लिए हाथ उठाए। योग के प्रति उत्साही भागीदारी देखी गई है। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का एक दशक पूर्ण हुआ है।

मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों से दिया गया योग का संदेश

पर्यटन स्थलों पर साधकों ने की सामूहिक योग साधना

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पर्यटन विभाग ने प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सामूहिक योग कर योग का संदेश दिया। इन सभी स्थलों पर 'योग संगम' का आयोजन किया गया। योग के वैश्विक महत्व को बढ़ावा देने और नागरिकों को स्वस्थ जीवन-शैली अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आयोजित योग संगम में बड़ी संख्या में जन-प्रतिनिधियों, अधिकारियों-कर्मचारियों, स्कूली विद्यार्थियों और नागरिकों ने हिस्सा लेकर योग साधना की।

प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि भारत सरकार द्वारा निर्धारित इस वर्ष की थीम एक पृथ्वी एवं एक स्वास्थ्य के लिये योग है, जो योग के समग्र लाभों और वैश्विक कल्याण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारा प्रयास है कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से न केवल योग के महत्व को उजागर किया जाए, बल्कि मध्यप्रदेश को एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में भी बढ़ावा दिया जाए।

प्रमुख पर्यटन स्थलों पर हुए सामूहिक योग कार्यक्रम

प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सामूहिक योगाभ्यास के कार्यक्रम हुए। यह कार्यक्रम धार जिले के मांडू, ग्वालियर किला, अशोकनगर के चंदेरी, मुरैना के पड़ावली, अनूपपुर जिले के अमरकंटक, रायसेन जिले के भीमबेटका और सांची, राजधानी भोपाल के केरवा, विंड एंड वेव्स, कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर, उमरिया जिले के बांधवगढ़, छतरपुर जिले के खजुराहो-पश्चिमी मंदिर समूह, निवाड़ी जिले के ओरछा कंचना घाट, जबलपुर के भेड़ाघाट, उज्जैन के महाकाल लोक, इंदौर के राजवाड़ा, खण्डवा जिले के ओंकारेश्वर एकात्म धाम, नर्मदापुरम जिले के पचमढ़ी धूपगढ़ में 'योग संगम' के माध्यम से मध्यप्रदेश ने यह संदेश दिया कि योग केवल आत्मिक और शारीरिक संतुलन का माध्यम ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और पर्यटन को बढ़ावा देने का भी प्रभावशाली साधन है।

प्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों से दिया गया योग का संदेश न केवल नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करता है, बल्कि इन स्थलों की वैश्विक पहचान को भी सशक्त करता है। यह आयोजन पर्यटन और योग का सुंदर समागम बनकर उभरा है, जो 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' की थीम को सार्थक करता है और मध्यप्रदेश को एक समग्र एवं जागरूक पर्यटन राज्य के रूप में स्थापित करता है।

सीएमएचओ की जांच में गोलखेड़ी आंगनवाड़ी केंद्र फेल

गर्भवती की नहीं हुई जरूरी जांच, एएनएम को निमोनिया के लक्षण नहीं पता, मिला नोटिस

भोपाल (नप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. मनीष शर्मा ने शुक्रवार को ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस के तहत ग्राम गोलखेड़ी स्थित आंगनवाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान हेल्थ फैसिलिटीज और पोषण कार्यक्रम के संचालन में कई गंभीर कमियां पाई गईं। इसके अलावा स्टाफ द्वारा गंभीर लापरवाही के मामले भी उजागर हुए। जिसके देखते हुए एएनएम,सीएचओ सुपरवाइजर और आरबीएसके टीम के सदस्यों को नोटिस जारी किया है। इनसे 7 स्पष्टीकरण मांगा है। यदि, उचित जबाव नहीं मिलता है तो इन पर कार्रवाई करने की जाएगी।

निरीक्षण में पाई गईं मुख्य कमियां- सत्र स्थल पर एक 7 माह की गर्भवती महिला उपस्थित थी। जिसकी अब तक केवल 2 प्रसव पूर्व जांचें की गई थीं। हिमोग्लोबिन, वजन और ब्लड प्रेशर के अलावा कोई अन्य जरूरी जांच नहीं हुई थी। यही नहीं एमसीपी कार्ड में एक भी जानकारी नहीं दर्ज की गई थी।

इन कर्मचारियों पर हुई कार्रवाई- एएनएम सुनीता कोरी निर्धारित यूनिफॉर्म में नहीं थीं। उन्हें निमोनिया स्क्रीनिंग के लिए निमोनिया के लक्षणों की जानकारी भी नहीं थी। सीएचओ खुशबू यादव सत्र स्थल से गैरमौजूद पाई गईं। सुपरवाइजर शैलेंद्र शर्मा द्वारा सत्र स्थल का विजिट नहीं किया था। आरबीएसके टीम के सदस्य डॉ. पवित्रा दांगी और डॉ. इमरान खान बच्चों की स्क्रीनिंग के लिए उपस्थित तो हुए, लेकिन सत्र समाप्त होने से पहले ही स्थल से जा चुके थे।

युवा कांग्रेस में चुनाव के लिए वोटिंग का दूसरा दिन

पहले दिन 36 हजार युवाओं ने ली मेंबरशिप, 6 पदाधिकारियों के लिए डाले वोट

भोपाल (नप्र)। युवा कांग्रेस के लिए वोटिंग के माध्यम से किए जा रहे छह पदों के सिलेक्शन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। 20 जून से 19 जुलाई तक इसके लिए की जाने वाली वोटिंग प्रक्रिया में पहले दिन 36 हजार युवाओं ने युवा कांग्रेस की सदस्यता ली और फिर सभी छह पदों के लिए वोट डाले हैं। कांग्रेस प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने कहा है कि 19 जुलाई तक चलने वाली वोटिंग में लाखों युवा कांग्रेस की मेंबरशिप लेकर युवा कांग्रेस के नए प्रदेश अध्यक्ष समेत अन्य पदाधिकारियों के चयन में अपनी भूमिका निभाएंगे।

कांग्रेस नेता त्रिपाठी ने कहा कि प्रदेश में 20 जून की सुबह 9 बजे से मतदान और सदस्यता प्रक्रिया शुरू हुई है। इसमें वोटिंग के लिए जो फार्मूला तय किया गया है उसके मुताबिक 50 रुपए की सदस्यता फीस जमा कर सदस्य बनने के बाद यूथ कांग्रेस के छह पदों के लिए वोटिंग की जा सकती है। युवा कांग्रेस के जिन पदों के लिए वोटिंग की जाएगी उसमें ब्लाक अध्यक्ष, एसेंबली प्रेसिडेंट, जिला अध्यक्ष व जिला महासचिव, प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश महासचिव के पद शामिल हैं। एक सदस्य छह वोट डालेगा और इसके बाद होने वाली मतगणना के आधार पर परिणाम सामने आएंगे।

प्रदेश अध्यक्ष के लिए 18, प्रदेश महासचिव के लिए 178 युवा चुनाव मैदान में- युवा कांग्रेस में प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए कुल 18 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं वहीं प्रदेश महासचिव पद के लिए 178 प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। चुनाव कार्य से संबद्ध पदाधिकारियों के अनुसार सदस्यता फीस 20 जून से 21 जुलाई को शाम पांच बजे तक स्वीकार की जाएगी। इसके पहले एमपी में युवा कांग्रेस के चुनावों के लिए नामांकनों की स्क्रूटनी के बाद उम्मीदवारों के नामों की लिस्ट जारी हो गई है।

युकां प्रदेश अध्यक्ष के 18 उम्मीदवार- योगिता सिंह, जावेद पटेल, अभिषेक परमार, नीरज पटेल, गीता कड़वे, प्रमोद सिंह, विश्वजीत सिंह चौहान, विनय पांडेय, राजवीर कुडिया, प्रियेश चौकड़े, अब्दुल करीम सिद्दीकी, शुभांगना राजे जामनिया, आशीष चौबे, यश घनघोरिया, देवेन्द्र सिंह दादू, स्वीटी पाटिल, शिवराज यादव, मोनिका मांडरे।

प्रदेश महासचिव के उम्मीदवार

किशोर सोलंकी, ऋत्विक नाथ चौहान, राहुल हितेश ठाकुर राज नेमा, शुभम दुबे, अक्षय जायसवाल, सत्यम सिंह गुर्जर, अली शान मोहम्मद, इरफान खान, जयंत जोशी, आदित्य मिश्रा, गौरव विनोद दीक्षित, सुमन मौर्य, धीरज सिंह परिहार, अभिषेक पांडे, दिगंबर पारधी, अखंड प्रताप सिंह चौहान, अभिषेक जाट, आशुतोष सिंह, विनोद नाथ, प्रीतेश पटेल, सुनील कुमार जायसवाल, पंकज सिंह, शिवदीप रघुवंशी, आसिफ मोहम्मद, मानवेंद्र सिंह गुर्जर, यशवीर सिंह गोयल, धनजी गिरी, आशुतोष आर्य, राहुल राजपूत, अमन सिद्दीकी, जितेंद्र लोधी, मोहम्मद अली हुसैन, हेमंत कुमार मेहता, दीपक ठाकुर, रितेश रोहित, देवांशु सिंह परिहार, रोहित राजोरिया, शिव शंकर पोगरा, सांवरिया पटेल, अर्जुन गुर्जर, भागीरथ खतवासे, सुरेखा शाह, शहरयार, शेखर शर्मा, सद्दाम पटेल, अमित कुमार सोहेल पटेल, अनुज पटेल, योगेश एरोलू, मोहम्मद इरफान मनोज पाटीदार, लोकेश दीक्षित, सोपान कोहली, मोहम्मद यावर चौधरी।

शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए योग करें :स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह

स्कूली बच्चों, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों ने किया सामूहिक योग अभ्यास

भोपाल (नप्र)। नर्मदापुरम जिले में 11वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम समूचे अपार उत्साह के साथ मनाया गया। जिला मुख्यालय नर्मदापुरम में शासकीय नर्मदा महाविद्यालय में योग अभ्यास का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सामूहिक योग अभ्यास का नेतृत्व स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती नीतू महेंद्र यादव एवं अन्य जनप्रतिनिधि ने भी योगाभ्यास किया।

स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए हर व्यक्ति को योग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम जितना ज्यादा योग करेंगे हमारा मन उतना ही शांत रहेगा। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि योग व्यक्ति घर में भी कर सकता है, उसके लिए उसे

बाहर जाने की भी आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि स्कूल के बच्चों के लिए हम बेहतर भविष्य गढ़ने का कार्य कर रहे हैं।

भविष्य में सभी चीजें एआई के माध्यम से होगी। एआई तकनीक से हम आवश्यक सहयोग ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष सरकारी स्कूल के बच्चों ने भी अपनी प्रतिभा को साबित करके दिखाया है। 10वीं एवं 12वीं का रिजल्ट उत्कृष्ट रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाखापट्टनम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को योग दिवस की शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल से योग दिवस पर प्रदेशवासियों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की। दोनों कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण टेलीविजन के माध्यम से किया गया।

एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग की थीम पर योग- नर्मदापुरम जिले में सभी जगह एक पृथ्वी एक स्वस्थ के लिए योग की थीम पर आधारित योग अभ्यास के कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें समाज के हर वर्ग के व्यक्तियों ने उत्साह पूर्वक शामिल होकर सामूहिक योगाभ्यास किया गया।

मंत्री श्री राव ने पौधारोपण किया- 11वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने नर्मदा शासकीय महाविद्यालय के प्रांगण में सिंदूर का पौधा रोपा।

मुद्दा

डॉ. मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

इलाज या इल्ज़ाम: एआई से जीवन नहीं, भरोसा खतरे में

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अब भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था में तेज़ी से प्रवेश कर रही है। यह तकनीक जहाँ एक ओर डॉक्टरों की कमी, ग्रामीण इलाकों में विशेषज्ञ सेवाओं की अनुपलब्धता और जटिल रोगों के निदान में मददगार बन रही है, वहीं दूसरी ओर इसके अनियंत्रित उपयोग से चिकित्सा क्षेत्र में कई नैतिक, सामाजिक और संवैधानिक संकट उत्पन्न हो रहे हैं।

भारत जैसे देश में, जहाँ प्रति 1,000 जनसंख्या पर डॉक्टरों की संख्या अभी भी WHO की मानक सीमा से कम है, एआई एक महत्वपूर्ण सहायक के रूप में उभरता दिख रहा है। क?योर डॉट एआई जैसे हेल्थटेक स्टार्टअप एक्स-रे और सीटी स्कैन के ज़रिए टीबी, कोविड और निमोनिया की पहचान करने में मदद कर रहे हैं। निरामई जैसी कंपनियाँ थर्मल इमेजिंग द्वारा स्तन कैंसर की गैर-आक्रामक जांच की सुविधा प्रदान कर रही हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान एआई ने आरोग्य सेतु और कोविन जैसे प्लेटफॉर्मों में ट्रेसिंग, वैक्सीनेशन और डेटा प्रबंधन को कुशल बनाया। अब आईसीएमआर मलेरिया और डेंगू के लिए चेतावनी प्रणाली विकसित कर रहा है, जबकि आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन यूनिक हेल्थ आईडी के ज़रिए नागरिकों का स्वास्थ्य रिकॉर्ड डिजिटल कर रहा है।

लेकिन इस तकनीकी तरक़्क़ी के साथ एक बड़ा ख़तरा भी चुपचाप बढ़ रहा है, बिना जवाबदेही और पारदर्शिता के स्वास्थ्य में एआई का दखल।

बीते कुछ वर्षों में कई घटनाओं ने यह साफ कर दिया है कि अगर एआई पर निगरानी नहीं रखी गई, तो यह तकनीक इलाज के बजाय धोखे और भय का उपकरण बन सकती है

1. गुजरात और महाराष्ट्र में एक डीपफेक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें एक वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट को आयुर्वेदिक दवा का प्रचार करते दिखाया गया। परिणामस्वरूप सैकड़ों मरीज़ों ने कीमोथेरेपी छोड़ दी।
2. एम्स दिल्ली के डॉक्टर का एक फर्जी वीडियो सामने आया, जिसमें एक घरेलू इम्यूनिटी बूस्टर को कोविड के इलाज के रूप में बताया गया।
3. हैदराबाद के एक हेल्थटेक चैटबॉट ने स्ट्रोक के लक्षण वाले मरीजों को 'माइग्रेन' बताकर गुमराह किया।
4. राजस्थान में एक एआई आधारित स्किन टेस्टिंग मॉडल ने अनुसूचित जाति/जनजाति क्षेत्रों में कुष्ठ रोग की पहचान करने में असफलता दिखाई क्योंकि डेटा शहरी क्लीनिकों पर आधारित था।
5. बेंगलुरु की एक लैब ने एआई से कैंसर की झूठी रिपोर्ट जारी की, जिससे एक मरीज़ ने अनावश्यक बायोप्सी करवाई।
6. गुरुग्राम में डॉ. नरेश त्रेहन का डीपफेक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें उन्हें एक आयुर्वेदिक दवा का प्रचार करते हुए दिखाया गया।
7. कोझिकोड (केरल) में एक बुज़ुर्ग महिला को उसकी बेटी के नाम से फर्जी वीडियो कॉल कर 40 हजार की ठगी की गई।
8. लखनऊ में एक डॉक्टर का अश्लील डीपफेक वीडियो उसकी पत्नी को भेजा गया।
9. दिल्ली में डॉ. देवी शेट्टी और पत्रकार अंजना ओम कश्यप का संयुक्त डीपफेक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वे एक तेल आधारित क्रीम का प्रचार करते दिखे।
10. एक एआई-निर्मित फिटनेस ऐप ने एक मधुमेह रोगी को 'फास्टिंग डाइट' अपनाने की सलाह दी, जिसके कारण उसकी स्थिति गंभीर हो गई।

इन घटनाओं से यह सवाल उठता है कि जब कोई एआई सिस्टम गलत निदान करे, तो दोष किसका होगा? डॉक्टर का? सॉफ्टवेयर कंपनी का? या फिर किसी का नहीं?

यह संकट केवल तकनीकी नहीं है, यह संवैधानिक भी है। भारत का संविधान नागरिकों को स्वास्थ्य, निजता, गरिमा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार देता है। अनुच्छेद 21 में 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता' का अधिकार है, जिसमें गरिमामय चिकित्सा सुविधा और सुरक्षित सूचना का अधिकार शामिल है। जब एआई आधारित सिस्टम गलत जानकारी देकर जीवन से खिलवाड़ करते हैं, तो यह केवल चिकित्सा भूल नहीं, संवैधानिक उल्लंघन भी बन जाता है।

संविधान में निहित समानता (अनुच्छेद 14) का सिद्धांत तब टूटता है जब एआई मॉडल्स केवल शहरी या उच्चवर्गीय डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं और ग्रामीण, दलित या आदिवासी आबादी के लिए निष्क्रिय साबित होते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच भी तभी संभव है जब एल्गोरिद्म समावेशी डेटा पर प्रशिक्षित हों।

भारत सरकार ने 2023 में डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट पारित किया, लेकिन यह कानून अभी भी डीपफेक, बायस्ड एल्गोरिद्म और एआई-जनित चिकित्सा गड़बड़ियों पर स्पष्ट निर्देश नहीं देता।

समाधान जटिल नहीं, लेकिन राजनीतिक और संस्थागत इच्छाशक्ति की मांग करता है-

* भारत को तुरंत एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य एआई नियामक प्राधिकरण की स्थापना करनी चाहिए, जो सभी एआई आधारित हेल्थ उपकरणों की प्रमाणिकता, सुरक्षा और पारदर्शिता सुनिश्चित करे।

* सभी टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्मों पर डीपफेक पहचान तकनीक अनिवार्य की जाए।

क हर एआई आधारित निदान को मानव विशेषज्ञ द्वारा अंतिम समीक्षा के बाद ही लागू किया जाए।

* एआई प्रशिक्षण के लिए भारत को अपना खुद का डेटा सेट बनाना होगा, जो सामाजिक, भाषायी और जैविक विविधता को दर्शाता हो।

इस दिशा में कुछ सकारात्मक पहलें भी हो रही हैं। डाटालीड्स द्वारा संचालित एडीआईआरए (एआई फॉर डिजिटल रेडिनेस एंड एडवांसमेंट) जैसे कार्यक्रम भारत भर में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों और पत्रकारों को व्यावहारिक एआई प्रशिक्षण दे रहे हैं। यह गुगल डॉट ओआरजी एशियाई विकास बैंक और एवीपीएन के सहयोग से चलाया जा रहा है।

साथ ही, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में डिजिटल नागरिकता और मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि नागरिक डीपफेक या फर्जी चिकित्सा जानकारी को पहचान सकें।

कुल मिलाकर, एआई भारत की स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है लेकिन केवल तब, जब उसे संविधान की मूल आत्मा, यानी गरिमा, समानता, पारदर्शिता और जवाबदेही के मूल्यों के साथ जोड़ा जाए। वरना, वह तकनीक जो इलाज देने आई है, वही सबसे बड़ा संकट बनकर उभरेगी।

कहानी

सहारा

प्रगति त्रिपाठी

जयप्रकाश वर्मा बिजली विभाग में कार्यरत थे। स्वभावत कोमल हृदय और सेवा भाव से परिपूर्ण थे। किसी का दुख देख दुखी हो जाते। समाज में लोग उनकी काफी इज्जत करते थे। हर संभव दुखियों की मदद करने का प्रयास करते थे। उनके बचपन के दोस्त वीरभद्र जी के साथ हुए अन्याय ने उन्हें वृद्धा आश्रम खोलने के लिए प्रेरित किया। दरअसल वीरभद्र जी के बेटे ने धोखे से उनकी सारी संपत्ति अपने नाम कर ली और उन्हें घर से निकाल दिया। उनकी पत्नी इस सदमे से एक साल बाद चल बसी। एक साल तक वीरभद्र जी और उनकी पत्नी को जयप्रकाश जी ने अपने घर आश्रय दिया था और अब वीरभद्र जी उनके परिवार के सदस्य बन गए थे। जयप्रकाश जी ने वीरभद्र जी का संघर्ष अपनी आंखों से देखा था। कैसे इकलौते बेटे की ख्वाहिशों को पूरी करने में उन्होंने दम तक न लिया था और वैसे इंसान की ऐसी हालत देखकर वो अंदर तक टूट गए थे। वीरभद्र जी और उनकी पत्नी को तड़पता देख मन ही मन में ईश्वर को धन्यवाद देते जिसने उन्हें बेऔलाद रखा। आए दिन समाचार पत्रों में भी ऐसी खबरें सुनकर उन्होंने मन ही मन ठान लिया कि वे वैसे लोगों के लिए एक आश्रम का निर्माण करेंगे। इस बाबत उन्होंने वीरभद्र जी से बात की और उनके हामी भरने पर शहर में एक वृद्धा आश्रम खोला और उसका कार्यभार वीरभद्र जी को सौंप दिया। वजह ये थी कि जयप्रकाश जी को नौकरी से रिटायर होने में अभी पांच साल बाकी थे। इस मुहिम में उनके काफी दोस्तों ने भी सहयोग दिया। अपने कमाई के आधे पैसे आश्रम पर खर्च करते। कभी कुछ फंड भी इकट्ठा करते। शहर के कुछ नामी-गिरामी हस्तियां भी स्वत-डोनेशन दे दिया करती थी। दिन ब दिन बेघर लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। अब उनके वृद्धाश्रम में सदस्यों की संख्या कुल पचास पार हो गई थी।

जयप्रकाश जी कल अपने कार्यभार से रिटायर होने वाले थे। उन्होंने सोच लिया था कि अब अपना बाकि का जीवन वृद्धाश्रम को समर्पित करना है। रिटायर होने के बाद वो ऐसा ही करने लगे। जगह-जगह जाकर लोगों को जागृत करते। वैसे समूहों से मिलते जो सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए थे। इसी बाबत एक बार वो शहर के मेयर दुर्गा प्रसाद जी से मिलने पहुंचे। वहां और भी गैर सरकारी संस्थानों के सदस्य चंदा के लिए पहुंचे हुए थे। मेयर अभी कुछ काम में व्यस्त थे इसलिए सभी उनका इंतजार कर रहे थे। जय प्रकाश जी के बगल में एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति बैठे हुए थे। उन्होंने जयप्रकाश जी के पूछा आप किस संस्था से आए हुए हैं?

इस पर जयप्रकाश जी ने अपना परिचय और अपने वृद्धाश्रम के बारे में जानकारी दी। इस पर उस व्यक्ति ने उनके कार्य को सराहा और अपना परिचय देते हुए बताया कि उनका नाम कौशलेंद्र है और वो एक अनाथ आश्रम चलाते हैं और उसी के लिए यहां चंदा मांगने आए हैं।

जयप्रकाश जी ने उनसे अनाथालय के बारे में काफी जानकारी प्राप्त की और बच्चों की दिनचर्या के बारे में पूछा। इस पर कौशलेंद्र जी ने उन बच्चों का रूटीन बताया लेकिन कुछ शंका जाहिर करते हुए कहा बच्चों का लालन-पालन, पढ़ाई - लिखाई की सुविधा तो हम देते हैं लेकिन वो एक अच्छे नागरिक बने, उनका नैतिक और चारित्रिक विकास हो हम ये भी चाहते हैं लेकिन ये संभव नहीं हो पा रहा। अभी हाल ही में हमारे आश्रम का एक बच्चा भटक गया था। हमारी दस - पंद्रह लोगों की टीम है और बच्चे कुल मिलाकर पचास से ऊपर है, सभी बच्चों के व्यवहार और उनके विचार को समझना और उन्हें सही राह पर चलने के लिए प्रेरित करना हमारे लिए असंभव सा है। काश इन्हें ऐसे लोगों का सानिध्य मिल जाता जहां इनके शारीरिक विकास के साथ - साथ नैतिक और चारित्रिक विकास भी संभव हो पाता!

उनके इतना कहते ही जयप्रकाश जी के दिमाग में एक विचार घूम गया।

आप जो कह रहे हैं वो मैं बहुत अच्छे से समझ गया, बच्चों को अच्छे संस्कार और परवरिश देना अति आवश्यक है ताकि ऐसे बच्चे भटक ना जाए या कोई ग़लत रास्ता ना चुन लें। मेरे पास इस समस्या का एक सामाधान है अगर आप कहें तो मैं बताऊं?

महाशय नेकी और पूछ-पूछ! जल्दी बताइए।

मैं सोच रहा था कि अगर अनाथालय और वृद्धाश्रम को एक साथ जोड़ दिया जाए तो बच्चों को बड़ों का सानिध्य और बुजुर्गो को जीवन जीने का एक उद्देश्य मिल जाएगा। क्या कहते हैं आप? जयप्रकाश जी ने उत्सुकता पूर्वक पूछा।

ये ख्याल तो कभी मेरे दिमाग में आया ही नहीं। बात तो आपने बहुत ही अच्छी कहीं है। लेकिन क्या यह संभव हो पाएगा? एक साथ इतने लोगों की जिम्मेदारी हम उठा पाएंगे? ये कदम है तो बहुत ही अच्छा लेकिन कठिन भी है। कौशलेंद्र जी ने सशंकित होते हुए कहा।

कौशलेंद्र जी जब आपने और हमने अपने अपने संस्थाओं की नींव रखी थी तब भी सबकुछ कहां आसान था? लेकिन असंभव तो नहीं था ना! संस्था के साथ धीरे-धीरे लोग जुड़ते गए, हमारे हौसले बढ़ते गए और आज हमारे परिवार के सदस्यों की संख्या दुगुनी हो चुकी है। सोचिए हमारे इस कदम से बूढ़ों और बच्चों को कितना सहारा मिलेगा। उन्हें एक परिवार मिल जाएगा। बुढ़ो को उनके पोते और बच्चों को उनके दादा का प्यार, एक गार्डियन, सलाहकार, अच्छे संस्कार, कितना कुछ मिल जाएगा। जैसे हमने अपना पहला कदम रखते हुए नहीं सोचा था वैसे ही यह कदम उठाते हुए ज्यादा नहीं सोचते हैं। हमारी नियत अच्छी है तो सब अच्छा ही होगा।

सच कह रहे हैं आप। आपकी बातों से बड़ी तसल्ली मिली। ईश्वर ने चाहा तो हम अपने इस प्रयास में जरूर सफल होंगे।

इतने में मेयर सभी से मिलने उनके पास आ गए और बारी-बारी से सबकी समस्या सुनी और उनका समाधान किया। जयप्रकाश जी और कौशलेंद्र जी ने अपना प्रस्ताव मेयर को सुनाया और उन्हें भी उनका यह सुझाव अच्छा लगा। उन्होंने यथासंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

दोनों अपने-अपने गंतव्य के लिए निकल गए। मेयर ने शहर में एक बड़ी जगह मुहैया करवा दी। जहां कम से कम सौ लोग आराम से रह सकते थे। उस जगह पर सरकार की मदद से कमरे बनवाए गए। धीरे-धीरे बच्चों और बुजुर्गो को वहां लाया गया और सभी एक साथ रहने लगे। बच्चों को अच्छे संस्कार और परवरिश भी मिलने लगी तथा बुजुर्गों को प्यार और सम्मान।

नवगीत

कैसे रहें चुप्पी को साधे

मोहन वर्मा

कैसे रहें चुप्पी को साधे और कैसे लब को खोलें
बीत गई है उम्र,सीख न पाये कब औ कैसा बोलें

चढ़ते रहे उम्र की सीढ़ी - रहे बदगुमानी में
कच्चे रहे शब्दों के तौल मौल ओर जुबानी में
बन्द होने के समय अब कैसे आंखों को खोलें

हर दम रहे दुखाते दिल को, इसके-उसके
आया कोई समझाने तो - लगे दिखाने ठसके
काश समझ पाते हम कैसे, शब्दों को तौलें....

मौन रहें, चुप्पी को साधें या दुनिया से भागें
गांठ लगे ना, बच जाए रिश्तों के धागे
बंजर माटी में अब कैसे, फसल सुवचन की बो लें...

सुनते रहे कभी रखा ना ढ़ाई आखर का मान
मुँह में जो बैठी है वो ही, देती मान-अपमान
कहो कबीरा कैसे साधे जिव्हा को हम हौले हौले

कैसे रहें चुप्पी को साधे और कैसे लब को खोलें
बीत गई है उम्र,सीख न पाये कब औ कैसा बोलें।

जला है दीया

कमलेश कुमार दीवान

कभी हवाओं तो कभी तूफान से जला है दीया
बुझाने वालों के ही अभियान से जला है दीया।

मिटाने आई है कितनी ही बार हस्तियां फिर भी
बार बार हर मक़ाम उसी शान से जला है दीया।

बहुत उजाला था बस्ती में कहीं अंधेरा ही न था
दिखाएं ऐसे नजारे बड़े अरमान से जला है दीय।

समय की धार तेज है उस भंवर में घूमते 'दीवान'
सच है कि हर बार अपने ईमान से जला है दीया।

लघुकथा

लीला

सुरेश सौरभ

हामिद दौड़ते हुए कपड़े सिल रहे, अब्बू के पास आया। तेज-तेज सांसें भरते हुए बोला- अब्बू! सवारी जा रही है सीता राम की। अबकि मैं भी मेले की रामलीला में भाग लूंगा।

कड़ कड़ कड़ करती सिलाई मशीन रोक अब्बू बोले-नहीं ले सकते

हामिद- क्यों? क्यों ? आप तो रामलीला के सभी कलाकारों के कपड़े सिलते हैं। कई बार आपकी तस्वीरें भी पेपर में छप चुकीं हैं।

हाँ हाँ तस्वीरें भी छप चुकीं है और गंगा जमुनी तहजीब संवारने के लिए, प्रशासन मुझे कई बार सम्मानित भी कर चुका है, पर तू उसमें भाग नहीं ले सकता? वो लोग हमें कभी किसी पात्र में न रखेंगे। वो उन्हें ही रखेंगे।

किन्हें

वही जो रामलीला कराने वाली किताब में लिखें हैं।

कट कट कट...अब्बू के पैर मशीन के पांव दान पर तेजी से हरकत करने लगे।

अब्बू बताते क्यों नहीं? बताते क्यों नहीं ,किन्हें रामलीला में रखते हैं....

हामिद जिद पर अड़ा था। चटाकऽऽऽ ... खामखां दिमाग खाए पड़ा है... जब बता दिया तुझे नहीं रखेंगे। वह अपने लोगों को ही राम रावण बनाएंगे, फिर भी घुसा पड़ा है.....

उं उं उंऽऽऽ...हामिद रोते हुए दरवाजे पर आ गया। उसके सामने, सीताराम के दरबार को, कहार अपने कंधों पर रामलीला मैदान की ओर लिए जा रहे थे, जिसे देख उसके आंसू थमने लगे।

कट कट कट...जुम्मन मियां की मशीन तेजी से चल रही थी। रावण का ग़ंगीन अचकन अंतिम स्वरूप में आ रहा था। लग रहा, अब मशीन दुरदुरा रही है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कथा

डॉ. वंदना अग्निहोत्री

सच्चा भोग

आज सुबह से ही जीजी सब कामकाज अपनी देख-रेख में करवा रही थी, चाहे झाड़ू पोंछा हो या कपड़े धुलवाना हो या रसोई का काम हो। लग रहा था मानो जीजी के पैरों में चकरी लगी हो। छोटी जीजी आखिर बोल ही दी - जीजी सुबह से इतनी दौड़-धूप कर रही हो। थोड़ा आराम कर लो। जीजी पसीना पोंछते-पोंछते बोली, अरे बिब्बो, आज का काम-काज अच्छे से हो जाए, शाम को अम्मा के भोग की थाली निकाल दें कि समझो सब हुआ। अम्मा को कितना शौक था न सबको बनाकर खिलाने का । जीजी का गला भर्रा गया था, आँखों से आँसू बहने लगे। बिब्बो भी रुआसी हो गयी। दोनों बहनें बैठ गयी। आज अम्मा को गए दस दिन हो गए थे अधिकतर पुरुष वर्ग दशा कार्य करने उज्जैन गए थे। घर पर महिलाएँ और बच्चे ही थे। अम्मा अपने पीछे भरा-पूरा, खुशहाल परिवार छोड़ गयी थी। दोनों बहने अम्मा की बातें करती हुई पुरानी यादों में खोई थी कि बड़ी भाभी घबराई सी अंदर आते हुए बोली, जीजी अमित की बहू की तबियत बहुत खराब हो रही है उसे घबराहट के साथ-साथ अब तो चक्कर भी आने लगे है, उल्टियाँ तो खैर हो ही रही है। उसे कुछ खिलाना पड़ेगा वर्ना कहीं और कुछ गड़बड़ न हो जाए।जीजी ने पूरी बात सुने बिना ही चिढ़कर कहा, हाँ तो सुबह से दूध चाय पी तो रही है फल भी खा लिए अब और क्या करें। परंपराओं में जकड़ी जीजी को आसानी से मनाना मुश्किल था फिर भी बीमार बहू का ख्याल रखते हुए भाभी बोली, जीजी मुझे लगता है कि सीमा को कुछ ठोस खिलाना पड़ेगा नहीं तो तकलीफ़ बढ़ जाएगी। जीजी बात काटते हुए बोली- अब क्या भोग की थाली निकालने के पहले ही बहू को खाना खिला दोगी, सब जूठा-अनूठा हो जाएगा। अरे जीजी सुनो तो सही कुछ अलग से खिलाने का कह रही हूं ।

भाभी की चिंता बढ़ती जा रही थी बहू प्रेग्नेंट थी और डॉक्टर ने पहले ही बेड़रेस्ट को बोला था उसका ब्लडप्रेशर पहले से लो चल रहा था। उन्होंने फिर से कहा- जीजी बहू ज्यादा बीमार हो जाए इससे तो अच्छा है कि उसे कुछ खिला दें। जीजी तुनकते हुए

बोली, जब सब मन से ही करना है तो मुझसे क्यों पूंछ रही हो, अब तो अम्मा के सब क्रियाकर्म बिगड़े ही समझो। बोलकर जीजी दूसरे कमरे में जाकर लेट गयी।

जीजी अम्मा की पहली संतान थी। दोनों के सुख-दुःख साझे थे दोनों मित्रवत रहती थी इसीलिए अम्मा का जाना जीजी को अंदर से मानो पूरा खाली कर गया था वो और भी अधिक सबसे गुस्सा करने लगी थी।अम्मा का क्रियाकर्म ठीक से हो जाए इसीलिए सुबह से वोअपनी देख-रेख में काम करवा रही थी।

शाम को अम्मा केभोग की थाली निकालते समय भैया ने पूछा, अरे जीजी! आगे तो बताओ क्या क्या करना है। जीजी ने उदासीनता से कहा, क्या बताऊँ आज तो बहू ने पहले ही मुंह झूठा कर लिया है।अब क्या भोग लगेगा अम्मा को। क्या, भैया चौंके- क्या बात हो गई मुझे भी तो बताओ।÷उनके माथे पर चिंता की रेखा उभर आयी थी। तब तक छोटी दीदी और बड़ी भाभी आ गई, उन्होंने बहू के बारे में सब बताया। भैया चिंतामुक्त होकर रुआंसी जीजी के पास जा बैठे और उनके कंधे को थपथपाते हुए धीरज बंधाते हुए बोले- जीजी! खाना खा लेने से बहू बीमार नहीं हुई अन्यथा न तो आप सब घर में ठीक से काम कर पाते और न ही हम लोग शांति से दशाकर्म कर पाते। आप तो मुस्कुराओ कि अम्मा के सब क्रियाकर्म ठीक से हो गए और भोग की थाली भी निकल गयी। अरे मुझे तो लगता है अम्मा को सच्चा भोग लग गया है । सब को लग रहा था कि जीजी शायद भाई को डाँट लगाएगी। पर ये क्या! सबने ने देखा जीजी सच में मुस्कुरा रही थी।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मूर्तन-अमूर्तन के बीच अनगिन भावों की कलाकृतियाँ

दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई, भोपाल, अमृतसर जैसे और भी जगहों पर निरंतर कलाकृतियों को प्रदर्शित करने वाले, कैनवास के विशाल धरातर पर अमूर्तन के अथाह सफर में भटकते यात्री की भांति निरंतर कुछ नये के खोज में रहने वाले कलाकार दिलीप शर्मा, कला से संबंधित विचार, मूर्तन-अमूर्तन पर बात होते ही कहते हैं कि अपने-अपने अनुभव के आधार पर ही होता है सब। मेरे अपने अनुभव के हिसाब से मुझे ऐसा लगता है कि हमें एकदम से अमूर्त की तरफ नहीं चले जाना चाहिए जब तक कि उस क्षेत्र में आप गहराई के साथ जानकारी ना हासिल कर लें।

अमूर्तन जो यथार्थ से काफी दूर नजर आता है पर ऐसा लगता है कि भाव प्रधान होता है, के साथ भाव के खोज हेतु ही जुड़ना चाहिए। देखिए मूर्तन तथा अमूर्तन के बीच या मूर्तन और अमूर्तन के यात्रा में मूर्तन जब अमूर्तन में विलीन हो रहा होता है तो वह पूरी तरह अमूर्तन नहीं हो जाता। कहीं ना कहीं से कुछ ही सही मूर्तन झलक ही रहा होता है। रोडलेस जर्नी (पेपर पर मिश्रित माध्यम, 36म44 इंच) जहाँ अमूर्तन की बात तो है, पर बात बड़ी गहरी है, अमूर्त वाकई पूर्णरूपेण अमूर्त में नहीं बदल गया है। कृति संवाद हेतु सर्वथा तैयार दिखती है जहाँ आँख-नाक मूल रूप में ना होने के बाद भी आभासी तरीके से उपस्थित है और अपनी बात अपने तरीके से रखती है। मुंह विशाल सा संपूर्ण ब्रह्मांड खुद में समेटे सा दिखा है। भाव और भी हो सकते हैं और सभी पर संवाद की संभावना भी रहती है। मूर्तन-अमूर्तन के बीच तो अनगिन पड़ाव आ सकते हैं, किस पड़ाव पर कलाकार पहुँचे, कुछ सोचकर या अनायास ही पहुँचे, किस पड़ाव पर दर्शक पहुँचे, दर्शक और कलाकार एक ही बिंदु पर पहुँच सके या नहीं, संभव है भी या नहीं? जैसे तमाम अनुत्तरित प्रश्न हैं जिनके खोज में आदिकाल से निरंतर कलाकार लगा हुआ है और जो हमेशा ही अनुत्तरित ही रहेगा पर इसी के बीच कलाकारों का अपना सफर भी है, जो निरंतर उतार-चढ़ाव के साथ जारी है। कलाकार दिलीप भी इसी यात्रा में शामिल हैं। अधिकतर श्याम-श्वेत कृतियों की सर्जना करने वाले दिलीप कहते हैं कि मूर्तन से अमूर्तन डायरेक्ट नहीं जाया जा सकता है। कहीं लाइन मोटी तो कहीं लाइन पतली, कहीं अपने हिसाब से कुछ और देखना पड़ जाता है, ऐसे ही बहुत सी चीजों को ध्यान में रखना पड़ता है और मूर्तन के

नाम पर ऐसा भी नहीं कि बहुत ही ज्यादा अमूर्तन हो जाए। मूर्तन और अमूर्तन के बीच को ही साधने का प्रयास करता हूँ मैं। काली श्रृंखला पर लगभग तीन सौ कृतियों को आपने रचा है, जिसके पीछे आपके अब तक की जीवन भर की कमाई है, दक्षिणेश्वर जैसे धार्मिक स्थलों की यात्रा है, काली के बस एक ही सर्वविदित रूप से अलग हट कर उनके और भी रूपों पर गहन अध्ययन है।

इसी श्रृंखला से एक कलाकृति 'काली' (कैनवास पर एक्रेलिक, 15म18 इंच) आपके माइथोलॉजी पर विशेष बल होने को दर्शाता है। आपके कृतियों में काली के रौद्र रूप के अलावा भी कई और रस के रूप को दर्शाया गया है। कहीं-कहीं तो खुद को ही फलक पर उतारते हुए से दिखे हैं आप। कलाकार दिलीप कहते हैं कि एकदम से, अनायास ही अमूर्तन की तरफ ना जाया जाए या कह सकते हैं कि अधूरी जानकारी के साथ अमूर्तन के तरफ जाना घातक होता है। कुछ लोगों को पता ही नहीं होता कि हमें करना क्या है? कितना रंग लगाना है? कौन सी रेखा कहाँ खींचनी है? वह बस किए जाते हैं जो आगे चलकर बहुत खटकता है। हमें निरंतर अभ्यास के बाद अमूर्तन के तरफ जाना चाहिए। मूल आकारों पर अधिकार के साथ, जड़ से जुड़ाव के साथ अमूर्तन की तरफ का रुख करना चाहिए। जड़ से जुड़ाव के बिना आसमान में उड़ना खतरे वाला हो जाता है। बाकी जो लोग सीनियर हैं, जो लोग कर रहे हैं उनकी अपनी यात्रा है।

ऐसा नहीं है कि... अब जैसे अभी देखा कि कई कलाकारों की कृतियाँ करोड़ की रेखा को फांद कर अरब में बिक गईं, खूब चर्चित रहीं, उसमें अगर ध्यान से देखा जाएगा तो समझ में आयेगा कि बिकी हुई अधिकतर कृतियाँ कलाकार के शुरुआती समय की थीं, जबकि कलाकार ज्यादा प्रसिद्ध नहीं हो सके थे और वो सभी बेसिक ही कर रहे थे। शुरुआत थी उन सभी के लिए। उस समय जो उनके आसपास की घटनाएं थीं, पारिवारिक स्थितियाँ थीं, सामाजिक स्थितियाँ थीं उसे ही उन लोगों ने क्रिएट किया, बनाया और आज देखिए कहाँ से कहाँ पहुँच गई कृतियाँ। इन सभी बातों के कहने का मतलब यह हुआ कि हम अगर खुद को देखकर, खुद के योग्यता के अनुसार जो काम करते हैं वह काम बाद में भी कमजोर और खराब नहीं होता। समय के साथ अपनी स्थिति को बरकरार रखता है और शायद जो मास्टर लोग हैं वह ऐसे ही मास्टर नहीं है बहुत सी चीजों को झेला है, देखा है, समझा है। आज वो अगर यहाँ पर हैं तो इसका मतलब यह है कि इसके पीछे की एक लंबी संघर्ष गाथा है, यात्रा है। वह अपने जड़ को नहीं छोड़े होंगे। जो चीजें करके आप खुश होते हैं इसका मतलब वो चीज आपके लिए है, आप उस चीज के लिए हैं। जिस समय मैं कला के क्षेत्र में आया था उस समय भी मैं खुश था और आज भी मैं खुश हूँ। मतलब कला मेरे लिए है और मैं कला के लिए हूँ। आज मैं जिस भी पड़ाव पर हूँ इसके पीछे अपने गुरुजी का हाथ मानता हूँ। आपने कला अध्ययन हेतु दरभंगा को चुना क्योंकि वहाँ पर आपकी मौसी रहती थीं, और कोई समस्या नहीं होनी थी। मास्टर भी आपने वहीं से पूरा किया है। बाद में जॉन फर्नांडीज, एमडी पब्लिकेशन आदि के लिए इलेस्ट्रेशन करते हुए दिल्ली तक सफर हुआ जहाँ आते ही आपको फेलोशिप मिल गया। लोगों, विशेषतः कलाकारों, कलाप्रेमियों के साथ मिलना-मिलाना हुआ। आर्ट मॉल, संकल्प आदि के साथ भी आपका जुड़ाव रहा। कलाकार संजीव सिन्हा के साथ में 2 साल उनके स्टूडियो में भी आपने काम किया। इनके माध्यम से ही और भी लोगों से जुड़ाव का अच्छा मौका मिला।

आप बताते हैं कि-2010-11 तक ऐसे ही मिलना-मिलाना चलता रहा उसके बाद 2012 से वाकई में कला क्या है?, कैसे काम करना चाहिए? यह सब थोड़ा अलग होकर मेरे कला में आया और जो अभी आप फार्म देख रहे हैं वह 2012 से ही स्टार्ट हुआ। आपके सिखाए बच्चे बड़े-बड़े संस्थानों में भी चयनित हुए हैं, कला के अलग-अलग क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं। विमला आर्ट फोरम से भी आप जुड़े हुए हैं। आपके अधिकतर कृतियों में दर्द है, वेदना है, व्यथित मन मस्तिष्क है, इन सभी के साथ ही गहन संवेदना युक्त भाव है।

उज्जैन फिर उज्जयिनी हो जाए

पं. सूर्यनारायण व्यास की पुण्यतिथि विशेष

राजशेखर व्यास

लेखक दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक हैं।

उज्जयिनी - उत्कर्ष के साथ जय करने वाली नगरी उज्जयिनी! आज के उज्जैन को दूर से देखने जानने वाले बहुत कम लोग जानते होंगे कि उज्जयिनी संसार की सबसे प्राचीन नगरी है। दावा दिल्ली, बनारस से लेकर भले ही रोम वेनिस भी करते रहें हो प्रमाण तो उज्जयिनी के पक्ष में ही हैं। आज जो राष्ट्र की राजधानी हैं दिल्ली, वह एक गाँवडा भी नहीं थी जब ईसा पूर्व 57 में उज्जयिनी सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी थी, जिनका शासन नेपाल अरब ईरान से ले कर अफ़ग़ानिस्तान तक था। मिस्र के तूतन खामन की खुदाई में स्वर्ण पत्र पर विक्रमादित्य की प्रशंसा में कविता प्राप्त हुई हैं! दरअसल इधर की पीढ़ी को यही पढ़ाया गया की हम पाँच सौ साल गुलाम रहें मुग़लों के, दो सौ साल गुलाम रहें अंग्रेजों के, तो तुम सदैव से पराजित पराभूत हारे थके लूटे पीटे जुवारी हो महाभारत के। वर्ष 1942 में 'विक्रम' पत्र का प्रकाशन आरंभ कर प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सैनानी पत्रकार सम्पादक और ज्योतिष जगत के सूर्य पद्म भूषण पंडित सूर्य नारायण व्यास ने 'विक्रमादित्य' पर पृथ्वी राजकपूर को ले कर एक फ़ीचर फ़िल्म बनायी और नयी पीढ़ी को बताया कि तुम सदैव पराजित पीढ़ी नहीं थी। विक्रम के पराक्रम को स्थापित करने उन्होंने उज्जयिनी में विक्रम विश्वविद्यालय विक्रम कीर्ति मंदिर स्थापित किया, तीन हज़ार पृष्ठ का विक्रम स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया हिंदी मराठी अंग्रेज़ी में, विक्रम युग की सवर्ण मुद्रा खोज निकाली, और दुनिया को बताया कि नवरत्न तो विक्रम के दरबार में थे, जिसकी नक़ल कर सम्राट अकबर ने भी कालिदास,वराह मिहिर, वररुचि,वैताल भट्ट,शंकु की तर्ज़ पर तानसेन, बीरबल टोडरमल रखे ! आज़ादी के पहले और बाद भी मानसिक गुलामी से हम मुक्त नहीं हुए थे। हमारे सारे राजनेता विदेश से पढ़कर आये थे, क्या गांधी, नेहरू,पटेल,सुभाष सभी,क्या अंबेडकर, क्या जयप्रकाश सब शेक्सपियर को तो जानते थे, कालिदास को नहीं। तब उज्जयिनी में 1928 में अखिल भारतीय कालिदास समारोह आरंभ कर सारे संसार को बताया पंडित सूर्यनारायण व्यास ने की विश्व कवि तो हैं कालिदास, नाटक कार भी शेक्सपियर से बड़ा ! एक समय था उज्जयिनी को महाकाल और पंडित सूर्यनारायण व्यास के नाम से ही जाना जाता था !

आज फिर एक पीढ़ी धर्म और पाखंड में लिप्त उज्जयिनी के असली साहित्यिक सांस्कृतिक वैभव से परिचित नहीं हैं! उज्जैन केवल महाकाल की नगरी ही नहीं, कृष्ण बलराम के गुरु महर्षि संदीपनीं की भी नगरी हैं। भास,शुद्रक, भर्तृहरि, राजशेखर उदयन वासवदत्ता की भी नगरी हैं। अकेले इस नगरी के बारह बार नाम बदले गये वेद पुराण और उपनिषद काल से। कनक श्रृंगा,कुश स्थली, अवंतिका, उज्जयिनी, पद्मावती कुमुदवती, विशाला, प्रतिकल्पा,अमरावती जैसे अनेक नाम से सुशोभित उज्जयिनी आज उज्जैन हैं। ज्योतिष की जन्मभूमि जिसका मेघदूत से ले कर कादम्बरी, कथा सरित्सागर में खूब गुण गान किया हैं तब से अब के साहित्यकारों ने। पद्म भूषण पंडित सूर्य नारायण व्यास इसे राष्ट्र की राजधानी बनाना चाहते थे। तब तो हुआ नहीं,आहट हैं कि अब होगा ! वे विक्रम संवत् को राष्ट्रीय संवत् बनाना चाहते थे। हमने ईसाई सन् संवत् अपना कर ग्रेगरियन केलेंडर को अपना लिया, जिस से आज हम 2025 में हैं। पर विक्रम सम्वत् अपनाया होता तो हम होते आज 2082 में,याने इक्कीस वी सदी में तो हम कितने साल पहले ही प्रवेश कर जाते ! उज्जैन के साहित्यिक सांस्कृतिक वैभव को सारी दुनिया तक पहुँचाने में व्यास जी जैसे महामना के बाद विगत पचास बरस से दूरदर्शन पर जयती जय उज्जयिनी काल और संसार के सारे देशों में प्रसारित अंग्रेज़ी में बनी फ़िल्म 'द टाइम' जिस से संसार को हमने बताया, कि सारे संसार को काल गणना भी हमने सिखायी! ग्रीनविच मीन टाइम से पहले उज्जयिनी स्टेण्डर्ड टाइम होता था!

आज उज्जयिनी में महाकाल लोक हैं, उज्जयिनी अद्भुत नगरी हैं। पर उज्जयिनी का जो आलोक था साहित्यिक,सांस्कृतिक,पौराणिक,ऐतिहासिक वह आलोक

महाकाल लोक में नहीं दिखाई देता हैं। क्योंकि आस्था,श्रद्धा,विश्वास अब धार्मिक पर्यटन में बदल गया हैं। धर्म में धंधा आ जाय तो पवित्रता लुप्त होने लगती हैं। यहाँ शक्ति पीठ हरसिद्धि भी हैं तो सिद्धि विनायक से मशहूर बड़े गणपति भी, तांत्रिक पीठ में दक्षिण मुखी महाकाल के अलावा उनके गण काल भैरव भी। आठ हज़ार बरस पुराने राजा भद्र सेन निर्मित इस मंदिर में काल भैरव मदिरा पान करते हैं। जब अपनी फ़िल्म जयती जय उज्जयिनी में पहली बार इसे लाइव दिखाया था तो सारे देश में हलचल मची अनेक देश से वैज्ञानिक भी आये,मगर वे भी यह खोज नहीं पायें कि काल भैरव जो मदिरा पीते हैं वह जाती कहा हैं ? यहाँ गोरखनाथ संप्रदाय के गुरु मच्छन्दर नाथ की समाधि भी हैं, और भर्तहरी की गुफा भी दर्शनीय स्थल हैं। भारत भर में जो दिल्ली मथुरा जयपुर बनारस में वेधशाला हैं, उज्जयिनी में भी उन्ही सवाई राजा जयसिंह निर्मित वेध शाला हैं जो आज तक कार्यरत हैं। अपनी फ़िल्म 'काल' और' द टाइम ' में काल गणना पर बेहद विस्तार से मैंने बेहद रोचक ढंग से समझाया हैं। फिर समय-समय पर होने वाले अनेक पर्व एवं त्यौहार, मेले-ठेल भी इस नगरी को जीवन्त और जागृत बनाये रखते हैं। कार्तिक मेला, शनिश्चरी अमावस्या-सोमवती अमावस्या तो त्रिवेणी के मेले, कभी श्रावण की सवारी तो कभी चिंतामन की यात्रा, पंचक्रोशी यात्रा और इन सबसे बढ़कर 'सिंहस्थ पर्व'।उज्जयिनी का जन्मदिन होता हैं बारह साल में एक बार - सिहस्थ पर्व के रूप में, कहानी हैं -'सिंहस्थ पर्व' का उज्जयिनी से घनिष्ठ सम्बंध है। भारत की प्राचीन महानगरियों में उज्जयिनी को अत्यंत पवित्र नगरी माना गया है-प्रयाग, नासिक- हरिद्वार, उज्जयिनी इन स्थानों की पवित्रता और श्रेष्ठता यहां होने वाले कुंभ अथवा सिहंस्थ महापर्व के कारण भी मानी जाती हैं। कुंभ या सिंहस्थ पर्व इन्हीं स्थानों पर क्यों मनाया जाता है? इस सम्बंध में 'स्कंदपुराण' में एक अत्यंत रोचक कथा- उल्लखित है- देवताओं और दानवों ने समुद्र मन्थन किया, उसमें से अनेक रत्न प्राप्त हुए, उनमें एक 'अमृत कुंभ कलश' भी मन्थन से प्राप्त हुआ। उस कुंभ कलश के लिये देवता और दानवों में परस्पर संघर्ष होने लगा। इंद्र का पुत्र जयन्त उस कलश को लेकर भागा, अमृत हेतु सभी उसके पीछे लग गये, कुंभ कलश भी एक हाथ से दूसरे हाथ पहुंचने लगा देवताओं में भी सूर्य, चन्द्र और गुरू का अमृत कलश संरक्षण मे विशेष सहयोग रहा था, चन्द्र ने कलश को गिरने से सूर्य ने फूटने से तथा बृहस्पति ने असुरों के हाथ में जाने से बचाया था। फिर भी इस संघर्ष में कुंभ में से अमृत की बून्दें छलकीं ये अमृत बून्दें-प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जयिनी नगरी में छलकी थी अतः ये स्थल कुम्भ पर्व के स्थल बन गये, ये ही वे चार तीर्थ हैं जो अमृतत्व बिन्दु के पतन से अमृत्तत्व पा गये। धार्मिक गणों की आस्था है कि कलश से छलकी बूँदों से न सिर्फ यह तीर्थ अपितु यहाँ की पवित्र नदियाँ, गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी एवं क्षिप्रा भी अमृतमयी हो गयी है।इस कथा में धार्मिक पवित्रता के साथ-साथ खगोलीय एवं वैज्ञानिक महत्व भी समाहित है। ग्रहों और नक्षत्रों की विशिष्ट गतिविधि के कारण ही सिंहस्थ अथवा कुंभ पर्व 12 वर्षों में एक बार एक नगरी में मनाया जाता है। ये विशिष्ट ग्रहयोग भी प्रत्येक पवित्र स्थल के लिये पृथक पृथक हैं। जैसे प्रयाग में होने वाले कुम्भ पर्व पर मकर राशि में सूर्य, वृष राशि में गुरु तथा माघ मास होना आवश्यक है। उज्जयिनी के कुम्भ पर्व को अन्य पर्वों से अधिक महत्व प्राप्त हैं, क्योंकि इसमें 'सिंहस्थ' भी समाहित हैं। 'सिंहस्थ-महात्म्य' में उज्जयिनी में सिंहस्थ पर्व होने के लिये दस योगों का होना अत्यावश्यक माना गया हैं, वे योग हैं। वैशाख मास, शुक्ल पक्ष पूर्णिमा, मेष राशि पर सूर्य, सिंह राशि पर बृहस्पति, तुलाराशि पर चन्द्र, स्वाति नक्षत्र, व्यतीपात योग, सोमवार एवं उज्जयिनी की भूमि। हम जब छोटे थे युवा हुए तो आंदोलन चलाते थे कि जब बॉम्बे मुंबई हो गया मद्रास चेन्नई तो उज्जैन का नाम भी उज्जयिनी हो।

मध्य प्रदेश के नये मुख्यमंत्री ने हमारी बात मानी हैं संभवत आप जब तक इन पंक्तियों को पढ़े उज्जैन फिर उज्जयिनी हो जाए। अब यह मेरी उज्जयिनी तो नहीं है चालीस साल पहले जिसे छोड़ कर, जिसका यश देश देश गाने मैं दिल्ली, मुम्बई, हॉलीवुड गया। जिस पर अनेक ग्रंथ रचे, अनेक फिल्में बनाई, मेरी यह उज्जयिनी तो नहीं। वर्ष अस्सी में तो जरूर था ये नन्हा सा,छोटा सा,प्यारा सा आत्मीयता से ओत प्रोत शहर उज्जैन पर उसमें उज्जयिनी धड़कती थी, उसमें उज्जयिनी रहती थी। अब जब सारी दुनिया नाप कर आया तो यह धार्मिक टूरिज्म, होटल, दुकान, मंगते भिखारी, पण्डे पुजारी, धर्म का धंधा करने वाला शहर मिला, जहाँ से उज्जयिनी तो गायब है ही उज्जैन भी नहीं रहा। साहित्य, संस्कृति, कला, प्रकृति, कालिदास, विक्रम, भृर्तहरि की उज्जयिनी कहाँ खो गयी। अपने साथ उज्जयिनी ले गया था आया तो ऐसा उज्जैन मिला। माननीय मुख्यमंत्री, माननीय प्रधान मंत्री का ध्यान गया तब ' शिवलोक ' को 'महाकाल लोक' कहने का नाम प्रधानमंत्री को सुझाया। उन्होंने मेरी पुस्तक ' जयती जय उज्जयिनी' पढ़ी। महाकाल वन का ध्यान किया, यहां से भैरव, गणेश व हनुमान जी का स्मरण किया। उज्जैन का नाम उज्जयिनी करने की बात तो हुई। उज्जयिनी को देश की राजधानी बनाने का स्वप्न जो पंडित सूर्यनारायण व्यास छोड गये थे, विक्रम संवत को राष्ट्रीय संवत बनाने का स्वप्न रच गये थे, वह स्वप्न सम्पूर्ण हो।

पहले सीज़न के जैसे ही तेवर सीज़न - टू में भी

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

पहले सीजन जैसे राणा नायडू के तेवर वेब सीरीज राणा नायडू सीजन टू के तेवर अपने पहले सीजन जैसे ही हैं। कोई आधा दर्जन लेखक एक विदेशी सिरीज का देसी अनुकूलन करने की कोशिश इस बार भी कर रहे हैं, सीरीज का लेखन देखकर ये तो समझ आता है कि मुम्बई में रहने वाले लेखकों ने दुनिया भले खूब घूम ली हो, अपना देश घूमना उन्होंने बन्द कर दिया है। मूल रूप से तेलुगु में बनी सिरीज़ के हिंदी डब संस्करण में मामला और ढीला हो जाता है। बस, चरित्रों

के अहंकार तने रहते हैं। एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में, जिसको हकीकत के करीब रखने की कोशिश मे ये सिरीज़ बार बार लड़खड़ाती है। सिरीज के निर्माता करण अंशुमान ने अपनी ही वेब सिरीज़ इनसाइड एज से क्रिकेट का काला धंधा उधार लिया है और 'मिर्जापुर' से चुराया है रिश्तों में घुलते क्राइम का पल्प फिक्शन जैसा परिवार।

लेखन और निर्देशन दोनों ही पैमानों पर असफल रही है - राणा नायडू सीजन टू । इसे करण अंशुमन, सुपर्ण वर्मा और अभय चोपड़ा ने मिलकर निर्देशित किया है। इसी कारण तीन -तीन दिमाग , तीन -तीन अलग दिशाओं में चलते हैं नतीजतन इस सिरीज़ में क्रिकेट और सिनेमा के साथ ही सियासत का भी एक ट्रैक समानान्तर रूप से चलता रहता है मगर तीनों? निष्प्रभावी होते हैं ।नेता और माफिया की इन्ट्री तो अब अपराध कथाओं में नई नहीं रही है और न ही दोनों की एक दूसरे से आगे निकलने की होड ही असामान्य है । नेटफ्लिक्स की लोकप्रिय वेबसिरीज राणा नायडू के यह दूसरे सीज़न की वापसी है और इस बार कहानी पहले से कहीं ज्यादा व्यक्ति केन्द्रित, स्याह और चुभने वाली (डार्क एण्ड इंटेस) नज़र आती है। राणा और उसके पिता नागा के बीच की पारिवारिक लड़ाई अब एक संवेदनशील और मनोवैज्ञानिक मुठभेड़ में बदल गई है ।

पहले सीजन में जहाँ पिता-पुत्र के बीच की दरारें कहानी का केंद्र थीं, वहीं इस बार मामला ईगो (अहंकार) और गिल्ट (अपराध बोध) की सीधी टक्कर का है। राणा, जो बड़े लोगों की समस्याएँ सुलझाता है, खुद अपनी जिंदगी की उलझनों से घिरा हुआ है बीवी और बच्चे उससे दूर होते जा रहे हैं और वह एक आखिरी बड़ा काम करके सब कुछ ठीक करने की कोशिश में है। अर्जुन रामपाल का चरित्र 'रॉफ' कहानी में रहस्य और खतरे की एक नई परत जोड़ता है। उनका चरित्र ही इस कहानी में बड़ा मोड़ लेकर आता है।

सिरीज़ का निर्देशन दमदार है और सिरीज़ को फिल्मांकन काफी भव्य अंदाज़ में होने से प्रभावशाली लगता है। छायांकन और पार्श्व संगीत पहले से भी ज्यादा असरदार और परिष्कृत है। कथा -पटकथा की बात करें तो पहले तीन एपीसोड थोड़े धीमे लग सकते हैं, लेकिन चौथे एपीसोड से कहानी गति पकड़ती है और भावपूर्ण गहराइयों के साथ आगे बढ़ती है।

अभिनय की यदि हम बात करें तो राणा दग्गुबाती ङ्क अपने चरित्र में पूरी तरह डूबे नजर आते हैं। वो पति, पिता, भाई और फिक्सर - हर भूमिका को सहज भाव से निभाते हैं। इधर वेंकटेश दग्गुबाती - 'नागा' की भूमिका को समूची भावप्रवणता के साथ निभा ले गये हैं । हर दृष्यपटल पर वे और भी प्रभावी अन्दाज़ में सामने आते हैं । कृति खरबंदा - इस सिरीज़ में एक बिल्कुल नए अवतार में दिखती हैं और शानदार अभिनय प्रदर्शन करती हैं। सुरवीन चावला भी स्क्रीन प्रेज़ेंस में विलक्षण है, और उन्होंने अपने हिस्से के अभिनय को खूबसूरती से निभाया है।अर्जुन रामपाल तो नेगेटिव रोल में जबरदस्त प्रभाव छोड़ते ही हैं।अभिषेक बनर्जी और सुशांत सिंह - दोनों कलाकारों ने अलग-अलग लेकिन स्मरणीय प्रदर्शन किए हैं।

भारत को सशक्त बनने के लिए 'आर्थिक' रूप से मजबूत होना होगा: हरिवंश

भोपाल। 'अर्थ' की ताकत दुनिया को बदल रही है। चीन ने इस दिशा में कदम बढ़ाये हैं। यदि 21 वीं सदी में भारत को ताकतवर बनना है तो हमें 'आर्थिक' रूप से मजबूत बनना ही होगा। यह कहना है राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश का। वे शनिवार को ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय में हिंदी पत्रकारिता द्वि-शताब्दी समारोह के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय प्रेस परिषद के वरिष्ठ सदस्य प्रकाश दुबे ने की। इस अवसर पर संग्रहालय द्वारा दिये जाने वाले सम्मान भी प्रदान किये गये।

वर्ष 2026 में हिंदी पत्रकारिता के 200 साल पूरे हो जाएंगे। इसी निमित्त सप्रे संग्रहालय द्वारा वर्ष भर आयोजन किये जाने हैं, यह कार्यक्रम इसी की पहली कड़ी था। कार्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने हरिवंश की कृति 'समय के सवाल' पर मुख्य वक्तव्य दिया।

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि हरिवंश ने अपने वक्तव्य में 'डिजिटल युग में हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियां' को केंद्र में रखकर अपनी बात कही। उन्होंने कहा कि वर्ष 1997 के बाद से डिजिटल मीडिया का दौर आया है। यह मीडिया प्रिंट मीडिया से सर्वथा अलग है। प्रिंट मीडिया में लिखे एक-एक शब्द का महत्व है। यदि वहां जरा भी गलत प्रकाशित हो जाये तो लिखने वाले से सबूत मांगे जा सकते हैं, लेकिन डिजिटल मीडिया में कुछ भी लिखा जा रहा है किसी की जिम्मेदारी तय नहीं है। यही सबसे बड़ी चुनौती है। इस मीडिया ने आपसी संवाद को समाप्त कर व्यक्ति को अपने तक ही केंद्रित कर दिया है। आज बच्चों से लेकर बड़े-बुजुर्ग तक इस माध्यम पर केवल स्वयं का ही बखान कर रहे हैं। एक तरह से व्यक्ति की सोच को कुंद कर दिया है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि डिजिटल मीडिया पर आ रही खबरों से आम

व्यक्ति को सचेत होना होगा। हरिवंश ने कहा कि तकनीक के दौर में विचार लगभग समाप्त हो चला है। आज डिजिटल मीडिया की पहुंच घर-घर तक हो चली है और यह नई सोच को जन्म दे रहा । हरिवंश ने कहा कि कोविड काल में भ्रमित करने वाली खबरें मीडिया में आईं। इस समय मीडिया को मिली स्वतंत्रता का सबसे ज्यादा दुरुपयोग हुआ। हमारे वैज्ञानिकों ने टीका बनाया उसकी आलोचना हुई। इसी तरह हमारे वैज्ञानिकों द्वारा तैयार लड़ाकू विमानों के बारे में भी भ्रम फैलाने वाली खबरें प्रसारित हुई हैं। यह सब चुनौतियां मीडिया के सामने हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय प्रेस परिषद के वरिष्ठ सदस्य प्रकाश दुबे ने 'पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य और साख का संकट- भारतीय मीडिया परिषद की आवश्यकता' विषय पर अपनी बात रखी उन्होंने कहा कि भारत में पत्रकारों की सुरक्षा के प्रति ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कई उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट भी किया कि पत्रकारों पर जबरन मुकदमे लादकर उन्हें जेल तक भिजवाया गया। इससे पत्रकारिता की साख गिरी है। साथ ही उन्होंने पत्रकारों से भी कहा कि अपनी साख को बचाये रखना आपकी भी जिम्मेदारी भी है। आप केवल सरकार का ही ढोल नहीं पीटे बल्कि सच भी जनता के सामने लायें। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि यदि साख बचानी है तो जनता से जुड़ना ही होगा।

प्रकाश दुबे ने बताया कि वर्तमान में भारत में प्रेस परिषद है ही नहीं। आठ माह पहले इसका कार्यकाल पूरा होने के बाद नई परिषद नहीं बनी। नतीजतन आज 400 से ज्यादा शिकायतें लंबित हैं।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजयमनोहर तिवारी ने हरिवंश की कृति 'समय के सवाल' विषय पर वक्तव्य में कहा कि हरिवंश की पत्रकारिता लोकधर्म की पत्रकारिता है। उन्होंने आरबीआई की सुरक्षित नौकरी छोड़कर पत्रकारिता को अपनाया। इतना ही नहीं रविवार जैसे पत्र को छोड़कर अविभाजित बिहार के शहर रांची से निकलने वाले पत्र 'प्रभात खबर' में नौकरी की। लगभग बंद के कगार पर खड़े इस पत्र को फिर नया जीवन दिया। इस पुस्तक में उन्होंने अपने पत्रकारीय जीवन में मिले अनुभवों को सहेजा है। आसान शब्दों में कहें कि चार दशक के उनके पत्रकारीय जीवन का अमृत इस किताब में है।

इस अवसर पर माधवराव सप्रे पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित प्रखर संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह गलत है कि प्रिंट मीडिया का भविष्य सुरक्षित नहीं है। इस माध्यम का भविष्य तब तक असुरक्षित नहीं जब तक वह स्वयं नहीं चाहेगा। दुःख की बात है कि आज समाचार पत्रों में शब्दों की चिंता नहीं की जा रही है। शब्दों के सही अर्थ समझे नहीं जा रहे। विभिन्न संस्थानों से आये शब्दों को ही मानक मान लिया गया है। जबकि मीडिया को अपने शब्द स्वयं गढना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने कई उदाहरण भी दिये। संग्रहालय से मिली सम्मान राशि भी उन्होने संग्रहालय को समर्पित कर दी। इसके पूर्व संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर ने यह वर्ष हिंदी पत्रकारिता का 200 वां वर्ष है। यह हमारा दायित्व है कि हम इस ऐतिहासिक अवसर को धूमधाम से मनायें। यह जिम्मेदारी सप्रे संग्रहालय निभा रहा है। उन्होंने बताया कि इस निमित्त साल भर संग्रहालय कार्यक्रम आयोजित करेगा।

विभूतियों का हुआ सम्मान

कार्यक्रम में संग्रहालय की ओर से दिये जाने वाले सम्मान प्रदान किये गये। इस क्रम में माधवराव सप्रे पत्रकारिता सम्मान से प्रखर संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी को सम्मानित किया गया। महेश गुप्ता सृजन सम्मान प्रेरक वक्ता डा. विजय अग्रवाल को प्रदान किया गया। इस वर्ष से जनसंपर्क विभाग के दिवंगत उपसंचालक मनोज पाठक की स्मृति में शुरु हुए नए सम्मान मनोज पाठक न्यू मीडिया पुरस्कार से शोध अध्येता राकेश मालवीय को सम्मानित किया गया। सम्मानित विभूतियों की प्रशस्ति का वाचन शोध निदेशक डॉ. मंगला अनुजा ने किया। कार्यक्रम में कीर्तिशेष मनोज पाठक के मित्रों - स्वजनों की भावांजलि पर केन्द्रित पुस्तक मित्र स्मृति स्मरण मनोज पाठक का विमोचन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग में योग सत्र

भोपाल (नप्र)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून शनिवार को नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने भोपाल के शिवाजी नगर स्थित पालिका भवन कार्यालय परिसर में योग सत्र का आयोजन किया गया।

सामूहिक योग सत्र में विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने योगाभ्यास कर तन, मन और आत्मा की शुद्धि के साथ 'योग से एकता' के संदेश को आत्मसात किया। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त

श्री संकेत भोंडवे ने कहा कि सामूहिक योग के आयोजन का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि योग हमारी प्राचीन परंपरा का अभिन्न हिस्सा है, जो व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक होता है। योग सत्र के दौरान अपर आयुक्त श्री कैलाश वानखेड़े, श्री के.एल. मीणा, डॉ परीक्षित झाड़े, प्रमुख अभियंता श्री आनंद सिंह, अपर संचालक श्री अनिल गोंड, अधीक्षण अभियंता श्री जीवन सिंह एवं श्री रवि चतुर्वेदी सहित विभाग के समस्त अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने नियमित रूप से योग को अपने जीवन में शामिल करने का संकल्प लिया और सभी को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया।

योग दिवस विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी मांडू के जहाज महल में मनाया गया

केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर , कलेक्टर सहित कई विशिष्ट जनों ने की सहभागिता

धार। 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को विश्वभर में मनाया गया। इस वर्ष की थीम ÷एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग÷ है, जो एकता और कल्याण का संदेश देती है। पर्यटन स्थल मांडू में मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास विभाग सावित्री ठाकुर की उपस्थिति में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया ।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयुष विभाग द्वारा पर्यटन स्थल मांडू में मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, प्रशासनिक अधिकारियों, छात्र छात्राओं, जनप्रतिनिधियों एवं आमजन द्वारा बड़ी संख्या में सहभागिता कर योग किया गया।

जिला स्तरीय कार्यक्रम साईं बेमिंटन हॉल धार में जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, प्रशासनिक अधिकारियों, छात्र छात्राओं, जनप्रतिनिधियों एवं आमजन द्वारा बड़ी संख्या में योग किया गया। इसके अलावा जिले में भी जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों , छात्र-छात्राओं , आम जनों की उपस्थिति में सामूहिक योग किया गया।

भोपाल की कॉलोनी में घरों में आग लगाने की कोशिश

घर के बाहर खड़े वाहनों में की तोड़फोड़; सीसीटीवी में कैद हुए बाइक सवार बदमाश

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कमला नगर इलाके के नया बसेरा में शुक्रवार-शनिवार की देर रात बाइक सवार आधा दर्जन बदमाशों ने घरों में पेट्रोल डालकर आगजनी की कोशिश की। इतना ही नहीं, बाहर खड़े वाहनों में तोड़फोड़ कर उन्हें जला दिया। पूरा घटनाक्रम कॉलोनी में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हुआ है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, नया बसेरा में स्थित कॉलोनी में शुक्रवार की देर रात तीन गाड़ियों पर सवार होकर करीब आधा दर्जन बदमाश आए थे। बदमाशों ने पहले घरों के गेट पर पेट्रोल डालकर आग लगाई और फिर बाहर खड़ी गाड़ियों में तोड़फोड़ कर दी। आगजनी और तोड़फोड़ की आवाज सुनकर लोग घरों से बाहर निकले तो बदमाश मौके से फरार हो गए। साथ ही रहवासियों ने पानी डालकर आग को बुझाया।टीआई निरुपा पांडे ने बताया कि एक संदेही को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

धार में जल्द आएंगी रेल , केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने रेल लाईन के चल रहे कार्यों का अवलोकन किया

धार। लोकसभा क्षेत्र महू-धार से होते हुए झाबुआ-अलीराजपुर को दाहोद, गुजरात से जोड़ने वाली नई रेलवे लाइन पर निर्माणाधीन रेलवे ब्रिज, अंडरपास एवं धार में बन रहे नए रेलवे स्टेशन का निरीक्षण कर कार्य प्रगति की समीक्षा करने के लिए शुक्रवार को केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर ने रेलवे स्टेशन सहित रेल पटरी का अवलोकन कर गुणवत्ता को देखा ।

इस दौरान सावित्री ठाकुर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के आदिवासी क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी के विजन को साकार करने हेतु सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूर्ण किए जाएं।

यह महत्वाकांक्षी परियोजना न केवल मध्य प्रदेश और गुजरात को जोड़ने का माध्यम बनेगी, बल्कि आदिवासी अंचलों के आर्थिक विकास और क्षेत्रीय समरसता को भी नई दिशा देगी। श्रीमती ठाकुर ने बताया कि धार के रेलवे स्टेशन का नाम राजा भोज के नाम से रखा जाए इसलिए शीघ्र ही मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी को प्रस्ताव भेजेंगे।

इस अवसर पर भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम और जयराज देवड़ा, पश्चिम रेलवे के अधिकारी तपेश्वर राय सहित पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

एम्स भोपाल ने 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' थीम के साथ 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान ने समग्र स्वास्थ्य और निवारक देखभाल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए शनिवार, 21 जून 2025 को 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्साहपूर्वक आयोजन किया। यह कार्यक्रम एम्स भोपाल के आयुष विभाग द्वारा आयोजित किया गया, जो सुबह 6-30 बजे आईपीडी भवन स्थित गांधी गैलरी में प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर फैकल्टी, छात्र-छात्राओं, स्टाफ सदस्यों एवं आम नागरिकों ने सक्रिय सहभागिता की। इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग'के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि व्यक्ति का स्वास्थ्य, पर्यावरणीय संतुलन और वैश्विक सामंजस्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। प्रशिक्षित योग प्रशिक्षकों के निर्देशन में सभी प्रतिभागियों ने विभिन्न योगासन एवं प्राणायाम किए, जिससे कार्यक्रम स्थल पर एक शांत, अनुशासित और सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री निखिल गजराज विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. सुनील मलिक (माननीय अध्यक्ष, एम्स भोपाल) इस कार्यक्रम में संरक्षक के रूप में उपस्थित रहे। प्रो. (डॉ.) अजय सिंह (कार्यपालक निदेशक, एम्स भोपाल) मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के रूप में प्रो. (डॉ.) रजनीश जोशी, डीन (शैक्षणिक); श्री मयंक कपूर, प्रभारी उप निदेशक (प्रशासन) और डॉ. मयंक दीक्षित (प्रभारी चिकित्सा अधीक्षक) उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, योग शरीर, मन और पर्यावरण को जोड़ने वाला एक अद्भुत सेतु है।

एमपी में नर्सिंग कॉलेजों का होगा फिजिकल सत्यापन

30 जून तक पूरी करनी होगी जांच प्रक्रिया, सीबीआई जांच में फेल सहित अपात्र कॉलेज रडार पर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश सरकार ने नर्सिंग शिक्षा की गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए बड़ा कदम उठाया है। संचालनालय लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा ने सभी जिला दंडाधिकारियों को पत्र लिखकर शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए आवेदन करने वाली नई नर्सिंग संस्थाओं, सीबीआई व उच्च न्यायालय द्वारा डिफिशिएंट (कमी वाली) व अन सूटेबल (अनुपयुक्त) पाई गई संस्थाओं, और सीबीआई जांच से बची हुई संस्थाओं का फिजिकल सत्यापन करने के निर्देश दिए हैं। यह निरीक्षण 30 जून 2025 तक अनिवार्य रूप से पूरा करना होगा।

निरीक्षण के लिए सख्त निर्देश- विभाग ने पत्र में बताया है कि पूर्व में कई निरीक्षणों के दौरान नर्सिंग कॉलेजों द्वारा फर्जी दस्तावेज उपलब्ध कराए गए हैं। इसके अलावा, कई कॉलेज दूरस्थ इलाकों में स्थापित पाए गए हैं, जिससे निरीक्षण

दलों को उन्हें ढूंढने और वहां तक पहुंचने में कठिनाई होती है। न्यायालय द्वारा भी इस संबंध में समय-समय पर निर्देश दिए गए हैं, जिसके मद्देनजर इन निरीक्षणों को समय-सीमा में पूरा करना अनिवार्य है।

निरीक्षण के लिए गठित होंगी संयुक्त टीमें- इस बार निरीक्षण की प्रक्रिया को अधिक विश्वसनीय और न्यायसंगत बनाने के लिए निर्देशित किया गया है कि प्रत्येक जिले में स्वास्थ्य विभाग से चिकित्सक, वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी और राजस्व विभाग से स्ष्ठरू/तहसीलदार की संयुक्त निरीक्षण समिति गठित की जाए। यह टीम तय प्रारूप के अनुसार हर एक संस्थान का निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार करेगी।

ऑनलाइन आवेदन और रिपोर्टिंग प्रक्रिया

सभी संस्थानों द्वारा ऑनलाइन आवेदन पहले ही स्वीकार किए जा चुके हैं, और निरीक्षण रिपोर्ट ई-मेल एमपी नर्सिंग एनओसी जीमेल काम पर भेजनी होगी। साथ ही प्रिंटेड रिपोर्ट और दस्तावेजों की हार्डकॉपी भोपाल स्थित मध्यप्रदेश नर्सेस रजिस्ट्रेशन काउंसिल में भी जमा करानी होगी।

सीबीआई जांच से बच निकले संस्थान होंगे दायरे में

शासन के मुताबिक, सीबीआई द्वारा जांच से शेष रह गए नर्सिंग संस्थानों की भी जांच की जाएगी ताकि किसी प्रकार की लापरवाही या गड़बड़ी न रह जाए। माननीय उच्च न्यायालय द्वारा भी समय-समय पर इस संबंध में सख्त निर्देश जारी किए गए हैं, जिन्हें ध्यान में रखते हुए कार्रवाई की जा रही है।

एलएनयूआई ने कहा... दोषियों को संरक्षण, हाईकोर्ट जाएंगे

इधर, मध्यप्रदेश के चर्चित नर्सिंग घोटाले को लेकर एनएसयूआई के प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने राज्य सरकार और संबंधित विभागों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। परमार का कहना है कि उच्च न्यायालय के सख्त रुख के बावजूद, सरकार और विभागीय अधिकारी इस घोटाले के दोषियों को संरक्षण दे रहे हैं, जिससे हाईकोर्ट के निर्देशों की धज्जियां उड़ रही हैं। इधर, घोटाले में संलिप्त 99त्र लोग आज भी अपने रसूख और राजनीतिक संबंधों के चलते जांच के दायरे से बाहर हैं। जांच की धीमी गति से यह स्पष्ट है कि सरकार आरोपियों को बचा रही है।

इधर, रवि परमार ने आरोप लगाया कि गांधी मेडिकल कॉलेज भोपाल की मीनू नायर और राखी पटेल, जो सीधे तौर पर दोषी हैं, उन्हें दंडित करने के बजाय नर्सिंग काउंसिल में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंप दी गई हैं। उन्होंने डॉ. जितेंद्र महावर, डॉ. हरिसिंह मकवाना, डॉ. संदीप मर्सकोले, डॉ. वीरेंद्र धुर्वे, रजनी नायर, प्रियदर्शिनी डेहरिया, दीपिका कुंभारे, राजश्री मालवीय (गांधी मेडिकल कॉलेज) और स्टेला पीटर, ईस्टर शीबा एंड्रयूज, आरती तिवारी (नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज, जबलपुर) पर भी कार्रवाई न होने का मुद्दा उठाया।परमार ने कहा कि वे सभी दस्तावेजों और साक्ष्यों के साथ उच्च न्यायालय का रुख करेंगे और मांग करेंगे कि दोषियों पर तत्काल सख्त कार्रवाई हो।

एमपी की सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ में कोहरे में योग

इंदौर में एक्ट्रेस अदा शर्मा ने घुमाई लाठी; उज्जैन सांसद योग करते लोगों को देखते रहे

भोपाल (नप्र)। विश्व योग दिवस पर शनिवार को भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन समेत प्रदेशभर में कार्यक्रम हुए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल अटल पथ पर योग किया। कार्यक्रम में स्कूली छात्र-छात्राएं शामिल हुए। कुष्ठ रोगियों ने भी योग किया।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के साथ इंदौर के राजवाड़ा पर योग किया। इस कार्यक्रम में बॉलीवुड एक्ट्रेस अदा शर्मा भी पहुंची। योग के बाद अदा ने लाठी घुमाई। रुद्राष्टकम स्तुति का गायन भी किया।

एमपी में कई जगह पर थीम बेस्ड कार्यक्रम हुए। पीएम नरेंद्र मोदी के संदेश का प्रसारण भी किया गया। हिल स्टेशन पचमढ़ी में भी योग दिवस मनाया गया। यहां प्रदेश की सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ में स्थानीय लोगों ने योग किया। इस दौरान यहां कोहरा छाया हुआ था। खजुराहो में योग के दौरान हल्की बारिश होने लगी, लेकिन लोगों ने योगाभ्यास जारी रखा।

उज्जैन सांसद अनिल फिरोजिया योग के आधे से ज्यादा कार्यक्रम होने के बाद पहुंचे। वे कुछ देर तो खड़े रहे। फिर योग कर रहे लोगों को देखते रहे। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसान भाई-बहनों, लखपति दीदियों और कृषि वैज्ञानिकों के साथ दिल्ली स्थित आईसीएआर पूसा में योग किया।

मंत्री विजय शाह ने खंडवा में योग के बाद मीडिया से बात की। इस दौरान उन्होंने अपने पीए से कहा कि तुम भी वीडियो रिकॉर्डिंग करो, बाद में ये मीडिया वाले कुछ भी चला देते हैं। शाह ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अच्छे योग गुरु हैं।

रोहित शेट्टी का एक्शन से किनारा

अजय देवगन भी साथ देंगे

रोहित शेट्टी हिट डायरेक्टर्स में से एक हैं। उन्होंने एक्शन के साथ-साथ कॉमेडी बेस्ड फिल्मों पर भी मजबूत पकड़ बनाई। लेकिन, अजय देवगन के साथ 350 करोड़ी 'सिंघम अगेन' के फ्लॉप के बाद अब रोहित शेट्टी एक्शन वाली फिल्मों से ब्रेक लेते नजर आ रहे हैं। रोहित और अजय कॉमेडी फ्रेंचाइजी 'गोलमाल 5' के लिए साथ आ रहे हैं। जानकारी के अनुसार 'गोलमाल 5' पर काम शुरू हो गया है। फिल्म की कहानी सितंबर 2025 तक लॉक भी कर दी जाएगी।

फिल्मों की बॉक्स ऑफिस पर की गई कमाई को देखते हुए उनका हिट और फ्लॉप होना तय किया जाता है। अक्सर बड़े बजट की फिल्मों के लिए सबसे बड़ा टास्क ही अपना बजट निकालना होता है। रोहित की पिछली फिल्म 'सिंघम अगेन' के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। एक्शन फिल्मों के लिए मशहूर डायरेक्टर रोहित शेट्टी ने 'सिंघम अगेन' के लिए 350 करोड़ पानी की तरह बहा दिए। अपनी काबिलियत और दोस्त अजय देवगन पर उन्हें पूरा भरोसा था कि वो ये बाजी जीत जाएंगे। लेकिन, अफसोस 'सिंघम अगेन' का जो हाल हुआ, उसे देखते हुए अब रोहित दोस्त अजय के साथ एक्शन फिल्में करने से बचते नजर आ रहे हैं।

'सिंघम अगेन' जब फ्लॉप हुई तो रोहित ने तभी यह फैसला कर लिया था कि अब वो अजय देवगन के साथ अगली फिल्म एक्शन बेस्ड नहीं बनाएंगे। उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान खुद ये बात कही थी कि फिलहाल वो एक्शन बेस्ड फिल्मों पर फोकस नहीं करेंगे। वो अब अजय के साथ कॉमेडी फिल्म पर ध्यान देंगे, हुआ भी कुछ वैसा ही। गोलमाल, संडे, ऑल द बेस्ट, सिंघम, बोल बच्चन, सिंघम रिटर्न्स, सिंबा और सूर्यवंशी जैसी फिल्मों में रोहित और अजय ने साथ काम किया है।

वे कहते हैं न, दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। रोहित अजय के साथ अपनी दोस्ती पर तो कोई असर नहीं पड़ने दे रहे। लेकिन, वो एक्शन की बजाए कॉमेडी फिल्म बनाने जा रहे हैं। हाल ही में खबर आई कि रोहित और अजय कॉमेडी फ्रेंचाइजी 'गोलमाल 5' के लिए साथ आ रहे हैं। जानकारी के अनुसार 'गोलमाल 5' पर काम शुरू हो गया है। फिल्म की कहानी सितंबर 2025 तक लॉक भी कर दी जाएगी। माना जा रहा है कि अगले पार्ट में अजय देवगन के अलावा एक बार फिर अरशद वारसी, तुषार कपूर, कुणाल खेमू, श्रेयस तलपड़े और जॉनी लीवर जैसे कलाकार नजर आएंगे।

अजय देवगन को उनकी सीरियस जोनर वाली फिल्मों के साथ कॉमेडी फिल्मों के लिए भी काफी पसंद किया जाता है। लेकिन 'सिंघम अगेन' के फ्लॉप होने के बाद वो भी हल्की कॉमेडी वाली फिल्में करने में इंटरेस्टेड हैं। उनकी अपकमिंग फिल्मों की लिस्ट में भी कॉमेडी ड्रामा फिल्मों के लिए नाम शामिल हैं। जैसे 'सन ऑफ सरदार 2' और 'दे दे प्यार दे 2.' अब इस लिस्ट में 'गोलमाल 5' का नाम भी जुड़ गया।

350 करोड़ की 'सिंघम अगेन' ने भारत में 241.71 करोड़ का कलेक्शन किया। इस फिल्म से अजय और रोहित को काफी उम्मीदें थीं। क्योंकि, फिल्म को हिट बनाने के लिए उन्होंने पिक्चर में सितारों की फौज खड़ी की थी। अक्षय कुमार, रणवीर सिंह, टाइगर श्रॉफ, जैकी श्रॉफ, अर्जुन कपूर, दीपिका पादुकोण और करीना कपूर समेत फिल्म में और भी सितारे मौजूद थे। लेकिन, ये सभी सितारे मिलकर भी रोहित की 'सिंघम अगेन' को हिट नहीं बना पाए। ऐसा नहीं है कि रोहित शेट्टी ने एक्शन फिल्मों से तौबा कर ली। रोहित एक्शन बेस्ड फिल्म आगे बनाएंगे। लेकिन, थोड़े ब्रेक के बाद। डायरेक्टर इन दिनों जॉन अब्राहम के साथ राकेश मारिया की बायोपिक की शूटिंग कर रहे हैं। ये फिल्म साल 2026 की शुरुआत में बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। रियल लाइफ स्टोरी पर बेस्ड इस फिल्म में जॉन लीड रोल में नजर आएंगे। वहीं, राकेश मारिया की बायोपिक पर काम खत्म होने के बाद रोहित अपने दोस्त अजय के साथ 'गोलमाल 5' की शूटिंग शुरू करेंगे।

सलमान के बॉडीगार्ड ने जुनैद को मारा धक्का

सलमान खान पिछले कुछ लंबे समय से सुरक्षा को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में वे आमिर खान की फिल्म 'सितारे जमीन पर' की स्क्रीनिंग में पहुंचे। वहां सुरक्षा में चूक का मामला भी देखने को मिला। एक शख्स जबरदस्ती उनके करीब आने की कोशिश कर रहा था, जिसे एक्टर की सिक्योरिटी टीम ने झट से दूर हटाया। स्क्रीनिंग के दौरान एक घटना और हुई जिसने खूब सुर्खियां बटोरी। दरअसल, सलमान खान के सिक्योरिटी गार्ड ने आमिर खान के बेटे जुनैद को भी धक्का देकर दूर किया। जब वे उनसे मिलने आ रहे थे, तो सिक्योरिटी गार्ड ने जुनैद को साइड में कर दिया।

सलमान खान और जुनैद खान का ये मामला कैमरामैन ने कैद कर लिया। जिसे देखने के बाद सोशल मीडिया पर सब रिएक्ट करने लगे। हुआ ये कि सलमान खान का ध्यान कहीं और था तो जुनैद उनकी और आ रहे थे। मगर सलमान की सिक्योरिटी ने उन्हें दूर कर दिया। सोशल मीडिया पर ये वीडियो जमकर वायरल हुआ। सलमान खान आमिर खान की फिल्म 'सितारे जमीन पर' की स्क्रीनिंग में शामिल होने गए, पर जैसे ही जुनैद खान सलमान को देखते हैं, तो वह उनसे मिलने आगे बढ़ते हैं। मगर आसपास मौजूद बॉडीगार्ड उन्हें तुरंत रोकते हैं। जुनैद फिर भी गार्ड्स को समझाते हैं, लेकिन वे उन्हें आगे नहीं जाने देते और पीछे हटा देते हैं।

कई यूजर्स को जुनैद खान के लिए बुरा लगा। एक ने लिखा 'क्या सलमान खान अंधे हैं, जो उन्हें जुनैद नजर नहीं आए।' दूसरे यूजर ने लिखा 'ये बहुत ही रूढ़ है, क्या वह जुनैद खान को देख नहीं पा रहे थे। आमिर खान और जुनैद को इतना हंबल होना कैमरे के सामने छोड़ देना चाहिए। सलमान खान को देखो कितनी अकड़ में सिक्योरिटी के साथ चल रहे हैं। जुनैद को देखो कितने प्यारे इंसान हैं! एक अन्य ने लिखा 'जुनैद खान गार्ड्स से कह रहे होंगे भाई जाने दे मैं आमिर खान का बेटा हूं।'

रियल बॉक्स

सोनम जैसी बेवफा पत्नियों की परदे पर कमी नहीं

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हमारे यहां पत्नियों की बेवफाई पर तो दर्जनों फिल्में बनी, लेकिन इंदौर की सोनम रघुवंशी ने जो करतूत की, वो फ़िल्मों के कथानक की सीमा रेखा से भी बाहर की बात है। भारत एक परंपरावादी और सुसंस्कृत समाज वाला देश है, यहां पति को परमेश्वर मानने की परंपरा है। ऐसे में पत्नी का पति की हत्या करवा देने जैसी घटनाओं को दर्शक अमान्य कर सकते हैं। इसी आशंका से निर्माताओं ने इस विषय को छूने में आम तौर पर कोताही बरती। ऐसा भी नहीं कि फिल्मकार के लिए यह विषय वर्जित रहा हो। फिल्मकार बीआर चोपड़ा के लिए न केवल पत्नी की बेवफाई पसंदीदा और बॉक्स ऑफिस की खिड़कियां तोड़ने वाला विषय रहा, बल्कि उन्होंने बेवफा पत्नी द्वारा अच्छे पति की हत्या के षड्यंत्र को भी परदे पर उतारने की हिम्मत दिखाई।

निर्देशन में अपना झंडा गाड़ने के बाद जब बीआर चोपड़ा को स्वतंत्र रूप से निर्माता बनने के लिए अशोक कुमार ने प्रेरित किया, तो उन्होंने पहली ही फिल्म के लिए बेवफा पत्नी के पति की हत्या जैसा ऑफ बीट विषय सुझाया। यह 1951 का दौर था, तब ऐसे विषय पर फिल्म बनाने का सोचना किसी आत्मघाती कदम से कम नहीं था। लेकिन बीआर चोपड़ा ने हिम्मत दिखाई और अशोक कुमार, कुलदीप कोर, प्राण और जीवन को लेकर आईएस जौहर की कहानी, पटकथा और संवाद पर फिल्म 'अफ़साना' का निर्माण और निर्देशन किया। इस फिल्म ने दर्शकों के दिमाग के साथ साथ बॉक्स ऑफिस पर भी सनसनी फैलाकर सफलता के झंडे गाड़ दिए। इसके बाद उन्होंने गुमराह, हमराज़ और 'धुंध' में भी पत्नी की बेवफाई के अलग-अलग किस्से सैल्यूलाइड पर बुनते हुए बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा दी थी। उनका इस विषय से प्रेम यहां तक ही सीमित नहीं रहा। नए ज़माने में दिलीप कुमार, शर्मिला टैगोर, बिंदु और प्रेम चोपड़ा को लेकर उन्होंने 'अफ़साना' का ही रीमेक 'दास्तान' बनाई। पर, ये फिल्म उतनी सफल नहीं रही। इसके बाद उन्होंने बेवफा पत्नी द्वारा पति की सुनियोजित हत्या का ताना-बाना फिर बुना जिसके तार थे राजेश खन्ना और नंदा। 'इत्तेफाक' नाम से बनी इस फिल्म ने एक बार फिर सनसनी मचा कर बॉक्स ऑफिस पर धमाका कर दिया।

बीआर चोपड़ा की इस परम्परा को उनके छोटे भाई यश चोपड़ा ने भी आगे बढ़ाया। बीआर फिल्म्स से अलग होकर उन्होंने राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर और राखी को लेकर फिल्म 'दाग' बनाई। उसमें भी यही बेवफाई थी, पर कहानी का प्लॉट मज़बूरी से बंधा था। इसके बाद उन्होंने देव आनंद, हेमा मालिनी, राखी, बिंदु और प्राण को लेकर फिल्म 'जोशीला' बनाई गई। उसमें भी बिंदु अपने पति प्राण से बेवफाई कर उसे मारने का षड्यंत्र रचती है। फिल्म 'एक नारी दो रूप' और जोशीला की कहानी लगभग समान होने और उसके पहले रिलीज होने के कारण 'जोशीला' दर्शकों को बांध नहीं सकी। इसके बावजूद यह विषय नहीं पिटा। कुछ सालों के बाद सुभाष घई ने मिर्च मसाला लगाकर 'कर्ज' नाम से फिल्म बनाई। इसमें ऋषि कपूर के पिछले जन्म की बीबी सिम्मी गरेवाल अपने पति को कार से कुचलकर वैसे ही खाई में फेंक देती है, जैसे सोनम ने अपने पति को शिलांग की पहाड़ी से निपटाया था।

सोनम रघुवंशी केस में पति राजा की मौत के बाद सोनम पर शक हुआ और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इस केस ने हसीन दिलरूबा, डार्लिंग और 'जाने जान' जैसी फिल्मों की याद दिला दी। इस कड़ी में पहला नाम 'हसीन दिलरूबा' का ही होगा, जिसमें विक्रांत मैसी और तापसी पन्नू नजर आए थे। इस फिल्म में तापसी पर पति की हत्या का आरोप लगता है। फिल्म को विनिल मैथ्यू ने डायरेक्ट किया है। आलिया भट्ट की नेटफ्लिक्स पर एक फिल्म रिलीज हुई थी 'डार्लिंग' जो घरेलू हिंसा पर बनी शानदार फिल्मों में से एक है। इस फिल्म में भी नायिका अपने पति को मौत के घाट सुला देती है। साल 2023 में करीना कपूर, विजय वर्मा और जयदीप अहलावत थ्रिलर फिल्म 'जाने जान' लेकर आए थे। इसे सुजॉय घोष ने डायरेक्ट किया और फिल्म में करीना कपूर का किरदार माया अपने पति अजीत का गला घोंटकर हत्या कर देती है।

'अ परफेक्ट मर्डर' फिल्म 1998 में आई थी। फिल्म में दिखाया गया कि कैसे एक महिला की शादी वॉल स्ट्रीट के मशहूर फाइनेंसर से हो जाती है। लेकिन, उसका डेविड शॉ नाम के एक आर्टिस्ट के साथ अफेयर भी चल रहा होता है। इस लव ट्रायंगल के इर्द-गिर्द ही इस फिल्म की रूपरेखा बुनी गई। अंत में महिला ही अपने आशिक की बंदूक से अपने पति पर वार करती है और सेल्फ डिफेंस का हवाला देती है। 2006 में आई फिल्म 'प्रोवोक्ड' में ऐश्वर्या राय बच्चन ने लीड रोल प्ले किया था। इस फिल्म में उन्होंने किरणजीत नाम की एक पंजाबी महिला का किरदार निभाया था। महिला शादी के बाद अपने पति के साथ अमेरिका चली जाती है। वहां कुछ दिन बाद उसे पता चलता है, कि उसका पति वैसा नहीं है जैसा वो समझती है। उसका पति उसे मारता है और उसके साथ हर तरह की बदसलूकी करता है। ये सब कुछ वो 10 साल तक झेलती है और एक दिन तंग आकर अपने पति का कत्ल कर देती है।

बेवफाई, मोहब्बत, लालच और साजिश की कहानी 2003 में आई फिल्म 'जिस्म' की याद दिलाती है। ये अपने दौर की सुपरहिट फिल्म थी। फिल्म में बिपाशा बसु ने सोनिया का किरदार निभाया था, जो हसीन, चालाक और रहस्यमयी महिला थी। वो अपने अमीर पति से तंग आकर एक वकील (जॉन अब्राहम) को अपने प्यार के जाल में फंसाती है। ये वकील कबीर लाल उसकी मोहब्बत में इतना अंधा हो जाता है कि उसके लिए अपने हाथ खून से रंग देता है। लेकिन अंत में सच्चाई सामने आती है। फिल्म 'लोग क्या कहेंगे' (1982) सामाजिक ड्रामा है, जिसमें एक महिला के मानसिक संघर्ष और सामाजिक दबावों को दिखाया गया। इसमें महिला अपने पति की हत्या तक कर देती है, लेकिन यह हत्या मानसिक असंतुलन और परिवार के तनाव के कारण होती है। शबाना आजमी ने इस फिल्म में दमदार अभिनय किया था, जो समाज की कठोर सोच और महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाती है।

परदे पर नायिका की बेवफाई के बेहिसाब किस्से हैं। ये फिल्में शादी के बाद प्यार और धोखे के विषयों पर आधारित है, जहाँ पत्नियां बेवफाई में लिप्त होकर पति को धोखा देती हैं या उसे रास्ते से हटा देती हैं। 'द अनफेथफुल वाइफ' (1969) ये फ्रेंच फिल्म एक कामुक थ्रिलर है, जो एक बेवफा पत्नी की कहानी बताती है। सनम बेवफा (1991) एक बेवफा पत्नी के कारण होने वाले दुख और दर्द की कहानी है। बेवफा (2007) ऐसे जोड़े की कहानी है जो शादी से खुश नहीं है और पत्नी बेवफाई में लिप्त हो जाती है। 'गहराइयां' (2022) फिल्म में पत्नी (दीपिका) अपनी शादी से खुश नहीं है और उसकी एक पारिवारिक समस्या के कारण उसे अपनी शादी के साथ एक बेवफाई का सामना करना पड़ता है। 'कभी अलविदा ना कहना' (2006) फिल्म में दो पात्र अपनी-अपनी शादी से तंग आकर एक दूसरे के साथ अफेयर करने लगते हैं। इन फिल्मों में से कुछ में पत्नियों को गलत तरीके से पेश किया गया। जबकि, कुछ में उनके दृष्टिकोण को समझने की कोशिश भी की गई।

सिर्फ हिंदी ही नहीं, अंग्रेजी में भी 35 साल पहले ऐसी ही फिल्म 'बरीड अलाइव' आई, जिसके प्लॉट ने दर्शकों के होश उड़ा दिए थे। 'बरीड अलाइव' यानी किसी को जिंदा दफन कर देना। 1990 में आई इस अमेरिकी फिल्म का डायरेक्?शन फ्रैंक डाराबोंट ने किया था। इसमें टिम मैथेसन, जेनिफर जेसन लेह, विलियम एथरटन और होयट एक्सटन लीड रोल में थे, इस फिल्?म को जबरदस्?त सफलता भी मिली। टीवी पर भी इसे खूब देखा गया। कई लोगों ने इसे 'मोस्ट अंडररेटेड फिल्?म' भी माना। असर यह हुआ कि 1997 में इसका सीक्वल 'बरीड अलाइव-2' भी रिलीज किया गया। ये ऐसी बेवफा पत्नी की कहानी है, जो प्रेमी के साथ मिलकर पति को जहर देकर मारने की कोशिश करती है। पति मर नहीं पाता, फिर भी उसे दफना दिया जाता है। अधमरा पति कब्र से बाहर निकल आता है। वह अपने घर लौटता है, लेकिन वहां उसे अपनी पत्नी और उसके प्रेमी के बारे में सच्चाई का पता चलता है। वह दोनों का सामना करने के बजाए पूरी तरह स्वस्थ होने के लिए तहखाने में छिप जाता है। उसके बाद का थ्रिलर बेहद रोमांचक था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मकारों ने 'मदर इंडिया' बनाई, पर 'फादर इंडिया' नहीं

अशोक जोशी

साल में कुछ खास दिन कुछ खास रिश्तों के नाम समर्पित हैं। जून के तीसरे रविवार को 'फादर्स डे' के रूप में मनाया जाता है। हमारे देश में हाल के वर्षों में यह दिन मनाने का चलन बढ़ा है। संतान की नजर में पिता हर मुश्किल को हल करने वाला एक ऐसा सक्षम

व्यक्ति होता है, जिसे वह अपने मित्र, पालक, संरक्षक और आदर्श के रूप में देखता है। लेकिन, कई बार इस खूबसूरत रिश्ते में कड़वाहट भी नजर आती है। बॉलीवुड में पिता पुत्र के रिश्तों पर आधारित फिल्मों का सिक्का खूब चला और इस रिश्ते से जुड़े हर पहलू को खूब भुनाया गया। पर 'फादर इंडिया' का अभी भी इंतजार।

हिंदी फिल्म जगत में पारिवारिक और सामाजिक फिल्में सदा से बनती और पसंद की जाती रही हैं। ऐसे में पिता सहित परिवार के तमाम सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। बहुत सी फिल्मों में पुत्र को पिता की मौत का बदला लेते हुए दिखाया गया और कुछ फिल्में ऐसी भी बनीं जिनमें पिता पुत्र का रिश्ता एक नए रूप में सामने आया। हमारे देश में रिश्तों को बहुत महत्व दिया जाता है और यह बात हमारी फिल्मों में भी झलकती है। 'मुगले आजम' में जहां अकबर और सलीम के रिश्तों की उहापोह दिखाई गई तो 'रुस्तमे सोहराब' मे भी लगभग वही मसाला था। फिल्म 'क्रिश' में एक पुत्र अपने वैज्ञानिक पिता और उसके अविष्कार को मानवता के खिलाफ उपयोग किए जाने से रोकता नजर आया। आम जनजीवन में हम रिश्तों से बंधे रहते हैं और जब पर्दे पर हम रिश्तों की खींचतान देखते हैं तो हमें वह खुद पर गुजरता महसूस होता है। यही वजह है कि राजेश खन्ना अभिनीत 'अवतार' और अमिताभ बच्चन अभिनीत 'बागबान' की कहानी को कई पिता अपनी कहानी समझते हैं।

पिता पुत्र के रिश्तों पर बनी कुछ फिल्मों में विवाहेत्तर संबंधों और उससे उत्पन्न संतान के रिश्तों का ताना-बाना बुना गया। शबाना आजमी और नसीरुद्दीन शाह की 'मासूम' और शाहरुख खान की 'मैं हूं ना' इसका उदाहरण हैं। 'कभी खुशी कभी गम' पिता के अहंकार की वजह से परिवार का बिखराव बताती है तो 'आ अब लौट चलें' में बेटा 'परदेस' में बसे पिता को अपनी मां के पास वापस ले आता है। इनमें मसाला है पर सब कुछ आसपास घटता प्रतीत होता है। हिंदी फिल्मों में पिता के साथ पुत्री के संबंधों के बजाय पुत्र के साथ संबंधों को अधिक महत्व दिया गया। शायद इसका कारण यह कि हमारा समाज पुरुष प्रधान है। सुनील दत्त की दर्द का रिश्ता और शायद ऐसी ही कुछ गिनी चुनी फिल्मों में पिता पुत्री के रिश्ते दिखाए गए।

पिता पुत्र पर बनी कुछ फिल्मों की कहानी गले नहीं उतरी, लेकिन फिल्में खूब चलीं। लावारिस, शक्ति, परवरिश, त्रिशूल आदि में उस दौर के एंग्री यंग मैन अमिताभ बच्चन का जादू सर चढ़कर बोला। लेकिन, फिल्मों में पिता पुत्र के रिश्तों में स्वाभाविकता नहीं नजर आई। अलबत्ता लगभग हर फिल्म में अमिताभ अपने बाप से नाराज ही दिखाई दिए। भरपूर मसाले के साथ 'भूतनाथ' भी चल गई जिसमें पिता की आत्मा तक पुत्र से नफरत करती है। बाप बेटे के बीच तनाव पर बनी फिल्में भी काफी हद तक सराही गई। राज कपूर की 'आवारा' इस विषय पर मील का पत्थर थी, जिसमें उनके पिता की भूमिका वास्तविक जिंदगी में उनके पिता पृथ्वीराज कपूर ने ही निभाई थी। बाद में इसे उलटकर उनके बेटे रणधीर कपूर ने 'धरम करम' बनाई जिसमें राज कपूर ने उनके पिता की भूमिका निभाई। 'बॉबी' में भी बाप और बेटे में

प्यार को लेकर तकरार का मसाला भरा गया था। इसमें प्राण ने ऋषि कपूर के पिता की भूमिका राज कपूर के अंदाज में निभाई। प्राण ने ऐसी ही एक भूमिका शराबी में अमिताभ के बाप बनकर निभाई थी।

'गांधी माई फादर' में महात्मा गांधी का उनके बेटे हरिलाल के साथ तनावपूर्ण रिश्ता जहां बहुत कुछ सोचने को मजबूर करता है। वहीं 'काश' फिल्म में बीमार बेटे और पिता का दर्द भरा रिश्ता विषम परिस्थितियों में भी संतान के लिए मोह बताता है। 'कयामत से कयामत तक' में पिता बेटे के प्यार में दीवानगी से परेशान होता है। वहीं 'सूर्यवंशम' में अनपढ़ बेटे को पिता अपनी संपत्ति से बेदखल कर देता है। जबकि, 'काश' में अपने बीमार बेटे के लिए एक पिता अपना करियर और बीबी सब कुछ छोड़ देता है। महमूद की 'कुंवारा बाप' भी बाप बेटे के रिश्तों पर आधारित एक सफल फिल्म थी। इसमें महमूद और उनके पोलियो पीड़ित बेटे ने अपनी निजी जिंदगी को पेश किया था। बाप बेटे के रिश्ते पर

बनी हॉलीवुड की सफलतम फिल्म 'रॉकी 2' पर हमारे यहां 'बॉक्सर' और दारा सिंह की 'रुस्तम' बनी।

'क्रेमर वर्सेस क्रेमर' पर देवानंद 'आनंद और आनंद' जैसी फिल्में बना चुके हैं। जबकि, 'बाप नम्बरी बेटा दस नम्बरी' जैसी फिल्मों की चर्चा ही बेमानी है। 'दंगल' का पिता कुश्ती में नकार दिए जाने के बाद अपनी बेटियों को अपनी खोई प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए उनकी सेहत के लिए हानिकारक बन जाने के बावजूद आखिर एक सफल पिता होने का दायित्व निभाता है। फिल्मों के कथानक ने ही नहीं गानों ने भी पिता के रिश्ते को लोकप्रियता प्रदान की है। बाबुल की दुआएं लेती जा, मेरा नाम करेगा रोशन जग में मेरा राज दुलारा और पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा ऐसे ही गीत हैं जो पिता की महिमा मंडित करते हैं। फिल्मों की एक और खासियत है कालांतर में यहां कुछ कलाकार ऐसे हुए, जो पिता की भूमिका के लिए एकदम फिट बैठते थे।

मनमोहन कृष्ण और नजीर हुसैन हमेशा टेसूएं बहाते हीरो-हीरोइन की मां के फोटो के आगे बस एक ही डायलॉग मारते दिखाई देते थे 'आज तेरी मां जिंदा होती ...।' नाना पलसीकर बीमार और गरीब बाप से आगे नहीं बढ़ सके तो बेटे या बेटी पर सख्ती दिखाने वाले अकडू बाप की भूमिकाएं केएन सिंह, कमल कपूर और राज मेहरा के लिए आरक्षित थी, तो मजाकिया बाप की भूमिकाओं में डेविड और ओमप्रकाश खूब रंग भरते थे। भले ही हिंदी फिल्मों में पिता की भूमिका पर बनी फिल्में खूब बनी और चली। लेकिन, एक बात आज तक खलती है कि सिनेमा ने एक अदद 'मदर इंडिया' तो जरूर दी। लेकिन 'फादर इंडिया' आज तक नहीं दे पाया, अलबत्ता 'मदर इंडिया' के निर्माता निर्देशक महबूब खान 'सन ऑफ इंडिया' बनाकर अपनी लुटिया जरूर डूबा चुके हैं।

एक अकेला, इस शहर में...!

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

भ वह सिपाही कभी समय नहीं चूकता है। सुबह-शाम, समय पर हाजिर। मजाल कि दो मिनट भी इधर-उधर हो जाए। आने में भी और ड्यूटी खत्म कर जाने में भी। कई लोग तो उसे ही देख कर समय जानते हैं। तय समय पर आ कर खड़ा हो जाता है, फिर पूरे ट्रैफिक को यूं देखता रहता है, जैसे बच्चा, किसी सर्कस को देखता है। बच्चा तो फिर भी जिज्ञासावश खिलौने को छू भी लेता है, लेकिन यातायात का यह रखवाला निर्विकार-भाव से आते-जाते को देखता रहता है। इधर से गुजरने वाले भी ट्रैफिक सिग्नल को तो फिर भी थोड़ा मान देते हैं, मगर उन्हें याद ही नहीं रहता है कि यहां कोई पुलिसमैन भी कर्तव्य निर्वाह कर रहा है, यानी खड़ा है! गजब का दमखम है उसका और उससे भी ज्यादा धैर्य। 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर' का यह आदर्श नमूना कहा जा सकता है। ना उसे आते-जाते से कोई शिकायत है और ना आते-जाते को उससे कोई परेशानी है। ना किसी को रोकता-टोकता है और ना कोई उसकी नपुंसक-साधना में आड़े आता है। खेत में बिजूके का तो फिर भी जानवर लिहाज रख लेते हैं, मगर यहां तो ऐसा भी कोई रिश्ता नहीं, उम्मीद भी नहीं। अपने काम से काम का आदर्श है ये चौराहा। लोग तो फिर भी मूड बदलने के लिए रोज ही भिड़ लेते हैं, मगर इस स्थितप्रज्ञ के चेहरे पर शिकन तक नहीं आती। कई बार तो मुझे यही लगता है, जैसे इसे जांचने के लिए ही यहां स्थापित किया गया है कि देखें कब तक यूं ही खड़ा रह सकता है।

'आप देख रहे हैं कि लोग लेफ्ट साइड पर खड़े हैं?' मुस्तैद सिपाही से कहा किसी ने।

'हां, जब आप देख रहे हैं तो मुझे भी दिखाई दे ही रहा है। हमारी आंखों की जांच साल में चार बार होती है और तभी तो यहां खड़ा किया जाता है।' शायद बरसों बाद उसे किसी ने बोलते देखा और सुना होगा।

'तो फिर आप उन्हें टोकते क्यों नहीं, रोकते क्यों नहीं, पूरा ट्रैफिक रोक रखा है इन लोगों ने?'

'ये तो रोज की बात है, बल्कि कहिए, हर वक्त की, क्योंकि जब भी जिधर की लाइट लाल होती है, यही होता है कि राइट साइड जाने वाले भी लेफ्ट में आ कर खड़े हो जाते हैं। यही नियम है, जो जनता ने बना रखा है। पीछे वाले हॉर्न बजाते रहते हैं, मगर इन्हें लगता है अपने लिए थोड़े ही, आगे वालों के लिए है।' अपने अनुभव का निचोड़ रख दिया सिपाही ने।

'लेकिन आप तो इन्हें रोक सकते हैं, रोकते क्यों नहीं?'

'ऐसी बात नहीं है कि हमने कभी किसी को रोका या टोका नहीं, लेकिन कोई एक दिन की बात हो तो कोई ऐसा कर भी ले, यहां तो हर सौ सेकंड के बाद यही होता है। आप देख ही रहे हैं कि चौराहा है। अब मैं अकेला हूं, चारों दिशाओं में तो दौड़ नहीं सकता। एक को संभालूं तो दूसरा छूट जाता है। इस शहर की आबादी चालीस लाख है, दस लाख गाड़ियां तो होंगी ही, सोचिए एक को अगर एक बार रोक भी लें तो क्या कुछ बदल जाएगा। एक रोज यहां खड़े होकर देखिए, सब समझ आ जाएगा। 'अकेला चना और भाड़' तो आपने सुना ही होगा, यह उसका जीता, जागता नमूना है।' 'धैर्यशील सिपाही' ने जवाब दिया।

'लेकिन ये जो रेड लाइट जंप कर जाते हैं, उन्हें भी तो आप रोकते नहीं?'

'हम दूसरों के काम में अड़ंगे नहीं डालते, देखिए उस तरफ, कैमरे लगे हैं ना, उसमें सभी दर्ज हो जाते हैं, यह अलग बात है कि दो महीने से ये बंद पड़े हैं और दर्ज करने वालों ने शिकायत दर्ज कराई या नहीं, यह मुझे नहीं पता। जिन्हें पता नहीं है, लाल बत्ती का लिहाज रख लेते हैं, बाकी तो यही मानते हैं कि जहां पचास चालान, वहीं इक्कावन भी।' सिपाही ने अंदर की बात भी बता दी।

'तो फिर आप की यहां ड्यूटी लगाई क्यों है?'

'अब हम तो पूछ नहीं सकते, अफसर भी रोज यहां से निकलते हैं, हमें खड़े देखते हैं और हमारे सैल्यूट भी लेते हैं। यदि हमारा यहां होना किसी मशरफ का नहीं होता तो दस साल से यहीं क्यों खड़ा करते? सच बात तो यही है कि इतने साल में हमारी किसी ने कोई कम्प्लेंट नहीं की और इस चौराहे पर कोई बखेड़ा भी नहीं हुआ तो हमारे यहां से जाने की कोई वजह भी तो नहीं है। राम झरोखे में खड़े होकर जग का मुजरा ले रहे हैं सरकारी पैसों से, और क्या!'

'लेकिन जनता को तो समझ नहीं है, उसे भी तो समझाना चाहिए ना?'

'दशहरे के खिलाए से पाड़ा भी कहीं हाथी होता है। एक दिन किसी को टोक भी दें तो अगले रोज फिर वही करेगा, अब हम हर एक का चेहरा तो स्केन किए बैठे नहीं हैं कि पकड़ लें कि कल समझाया था ना! जिस तरह ईश्वर है ना, उसका भय है, फिर भी दुनिया अपनी चाल से बाज नहीं आती है, वैसे ही हम हैं कि बस देख ही सकते हैं और इतने बरस हो गए देखते कि अब लगता है शायद ये ही सही हैं, लोकतंत्र का और क्या मतलब है, जो भीड़ करे, वही सही।' लगा किसी सिपाही से नहीं, गीताभवन में किसी संत से बात कर ली हो। जीवन का फलसफा साफ कर दिया!

गनबाते: सदा आगे बढ़ने की जापानी कला

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

वो मैं पहले ही घोषित कर चुकी हूँ मैं किसी पुस्तक का कंटेट इस्तेमाल नहीं करती बल्कि जो भी अच्छी किताबें, जो मुझे लगता है पाठको को पढ़ना चाहिये उसकी जानकारी देती हूं। जापान की लंबी और स्वस्थ जीने की कला को मंजुल पब्लिकेशन ने तीन पुस्तकों के जरिए हिंदी में प्रकाशित किया है जिसमें पहली पुस्तक 'इकिगाई' लंबे और खुशहाल जीवन का जापानी रहस्य, दूसरी 'बाबी साबी' यानी 'अपूर्ण होने का विवेक' पर हम बात कर चुके हैं। अब अल्बर्ट लीबरमैन की 'गनबाते' सदा आगे बढ़ते रहने की जापानी कला पर बातें करेंगे। ज़ाहिर सी बात है इसकी भी भूमिका हेक्टर गार्सिया ने लिखी है जो इकिगाई के सहलेखक भी रह चुके हैं।

चलिये पहले देखते है भूमिका में हेक्टर गर्सिया क्या कहते हैं, ''एक यात्रा हमें टोक्यो से होते हुये इनोशीमा और फिर उससे भी आगे, ओगीमी तक ले गई। वहां सौ वर्ष से भी अधिक आयु वाले ओकीनावा निवासी रहते थे। इकिगाई के सिद्धांत और अभ्यास की लंबी यात्रा जो हर दिन को भरपूर आनंद के साथ जीने का जापानी तरीका कहलाता है। पांच वर्ष पहले जिन निवासियों से मुलाकात हुई थी वो अभी भी वैसे ही स्वस्थ थे। लेखक ने पूछा आपकी लंबी आयु का रहस्य क्या है। उन्होंने कहा 'गनबाता'। इसका अनुवाद हो सकता है, 'मैं प्रतिदिन प्रयत्न करता हूँ।' फिर उन्होंने सिर झुका कर विदा लेते कहा, 'गनबाते'।

''आओ अभी से हर चीज़ के लिये प्रयत्न करना आरंभ करें। इसमें इनका इक मंन भी है। 'नाना कोरोबी यो ओकी। सात बार गिरें और आठ बार उठें।'

ये पुस्तक जीवन के हर क्षेत्र में प्रयत्न करने की ओर इशारा करती है मसलन कला, व्यवसाय, प्रेम, रिश्ते शिक्षा आदि में शांति पूर्वक, दृढ़ संकल्प के संतुलन के साथ। गनबाते एक मानसिकता है जो किसी भी कार्य को करने को प्रोत्साहित करने का नज़रिया है ये केवल शब्द भर नहीं है।

लेखक कहते हैं जैसे कई देशों के लोग परीक्षा या शुभकार्य के लिये जाते समय 'गुड लक' कहते हैं, वहाँ जापान में लोगों को प्रोत्साहित करने के लिये 'गनबाते' कहा जाता है।

गनबाते हमें सिखाता है कि हम सभी

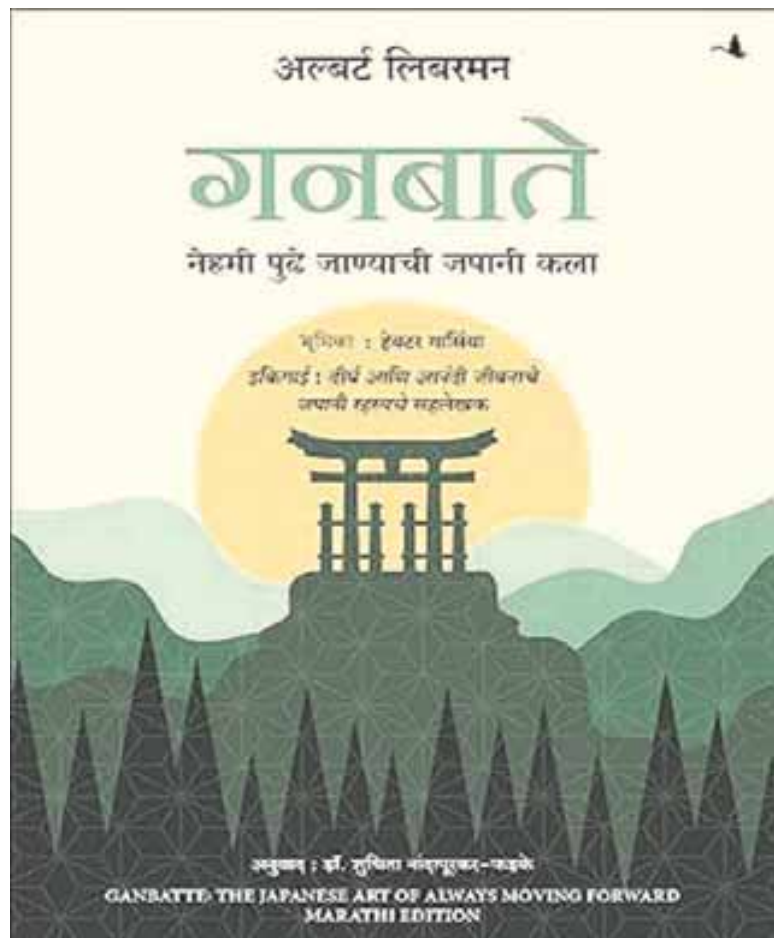

बाधाओं को पार करते हुये, कुछ भी मनचाहा करते हुये जोश और ऊर्जा से आगे बढ़ सकते है। जैसे हमारे यहाँ 'आर्ट आफ लिविंग' में 'सुदर्शन क्रिया' विपश्यना में 'आना-पान' वगैरह क्रियाएं होती हैं, उसी तरह गनबाते में होने वाली क्रिया को 'गनबारू' कहते हैं जिसका अनुवाद है 'अपनी ओर से बेहतर करें, कभी हार ना मानें, दृढता से खड़े रहें, किसी चीज़ पर काम करें, धैर्य बनाए रखें।'

आइये, आपको तुलनात्मक तरीके से बताएं। अक्सर हम कहते हैं, ये करने का मेरा मन नहीं कर रहा पर गनबाते मानसिकता कहती है, चाहे भले ही मेरा मन नहीं कर रहा पर मैं यह कोशिश करने जा रहा हूं। फिर आप देखेंगे मन मार के काम शुरू करने वाले हम थोड़ी देर कोशिश करते करते रूचि लेने लगेंगे। काम शुरू करने से पहले 'मैं हार मानता हूँ' की सोच रखने वाले ये कहे, मैंने जो सीखा है उसके अनुसार रास्ता बदल कर कोशिश करूँगा अर्थात् कार्य किसी भी हालत में ना छोड़े। भले ही रास्ता बदल लें या पद्धिति बदल लें पर कुछ ना कुछ करते रहे। नतीजा आपको सर्वश्रेष्ठ चाहिये अगर फेल हो गये तो इससे बेहतर है आप सोचेंगे कार्य ही ना करें। ये कुछ कुछ हमारी 'गीता' जैसा है कर्म किये जा फल की इच्छा मत कर इंसान।

बच्चों को दौड़ना, भागना, प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने का प्रोत्साहन दें, जीतने के लिये नहीं कोशिश के लिये उत्साहित करें। 'द ग्रेट वेव ऑफ कानागावा' समुद्र की लहर नाविक का उदाहरण देते आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। लहरों में (यहाँ जीवन के किसी भी कार्य की बात हो रही है) कूदने से पहले आपका तैयारी करना आवश्यक है। गनबाते ये नहीं कहता आप उफनते समुद्र में कूद पड़े। साथ ही गनबाते भाग्य पर नहीं अनुभव पर भरोसा करने को कहता है।

'इशी नो यू नी मो सान नेन' इसका शाब्दिक अर्थ है 'एक चट्टान पर तीन वर्ष।' अब इसका ये कतई मतलब ये नहीं कि तीन साल इक चट्टान पर बैठें तो आप उसे पिघला देंगे बल्कि ये है कि यदि आपने 'धैर्य' रखा तो आप कठिन से कठिन कार्य पूर्ण कर लेंगे।

'तेंसेकी कोके मुसागु' अर्थात् अस्थिर पत्थर पर काई नहीं लगती। इसका मूल अर्थ था कि घुमक्कड़ जो लोग हमेशा यात्रा में रहते है कहीं अपनी जड़े नहीं जमाते, इस तरह उनकी आज़ादी और आत्म निर्भरता बनी रहती है।

'शा कन कन' (धैर्य का मूल्य) मुझे ये काम जल्दी करना है। यदि आप धैर्य का दामन नहीं थामेंगे तो काम में देरी हो जाएगी।

कोई काम हम चाह कर भी नहीं शुरू कर पाते तो सोचिये आप के काम का चुनाव गलत है। इकठ्ठे एक साथ प्रेम दर्शाने से अच्छा है, रोज़ थोड़ा थोड़ा प्रेम जताये। कोई मुकम्मल नहीं होता अपने आप को अधूरेपन के साथ स्वीकारें। पुरानी योजना नहीं हो पा रही तो नई शुरू कर लें। कुछ बोलने से पहले थोड़ा रूक जाएं, सोचें, वक्त लें, फिर कहें। दोनों को साथ रहना है तो इक दूसरे को अधूरेपन के साथ स्वीकारें। पानी की तरह आकारहीन हो जाएं। जिस बर्तन में डालें ढल जायें। कोशिश करें ऐसा काम करें जो आपको आनंद भी दें। बीच बीच में श्वास भी लेते रहें। एक शब्द है काइजेन अर्थात् 'अच्छा परिवर्तन' अगर आप ग्रुप में मिलकर काम करें तो चुनौतियों का सामना कर पाएंगे। कार्य समाप्त होने पर सब मिलकर अपनी जगहों की सफाई करे।

संतो को नमन...

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को उज्जैन की तिरुपति क्रिस्टल कॉलोनी में आयोजित महायज्ञ में शामिल हुए।उन्होंने संत श्री से आशीर्वाद

जहां आधी आबादी का 'धर्म' नहीं!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

ब्रिटिश संसद ने उस ऐतिहासिक विधेयक को मंजूरी दे दी, जो इंग्लैंड और वेल्स में बीमारों को जिंदगी खत्म करने का अधिकार देगा। आस्ट्रेलिया, कनाडा सहित अमेरिका के कुछ राज्य हैं, जहां इस तरह का कानून पहले से है। ब्रिटेन में जीवन और मौत के फैसले मरीज और परिवार पर हैं। जो प्रियजन की मौत में मदद करते हैं। उन्हें केस का सामना करना पड़ता है। अपराध माना जाता है, फोन जब्त किए जाते हैं, परिवारों से पूछताछ की जाती है। कई के लिए यह बात घाव देती है, लेकिन उसके बाद होने वाला दर्द सबसे दुःखदायी है।

अभियान समूह 'अवर ड्यूटी आफ केयर' ने वेबसाइट पर ईश्वर का जिक्र नहीं किया है, न ही इसका कि यह ग्रुप समूहों के साथ दफ्तर साझा करता है। केयर नाट किलिंग की सदस्यता काफी हद तक धार्मिक है। केवल ईश्वर ही हमारे आने और निकास जाने का समय तय करता है। रहस्य इसकी गोपनीयता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उनके शब्द ऐसे देश में बहुत कम काम आते हैं, जहां तिरेपन फीसद लोगों का कोई धर्म नहीं है। जीबी न्यूज पर जैकब रीस-मोग ने लेबर पर 'मृत्यु के पंथ' का आरोप लगाया, जिसमें लेबर सांसदों ने 'गर्भ में बच्चों की हत्या के लिए अनुमति देने के लिए हाउस ऑफ कॉमंस के भयानक वोट' के सप्ताह में 'बुजुर्गों को खत्म करने के लिए वोट दिया।' 'मृत्यु का पंथ' उन पर ज्यादा लागू होता है जो दूसरों को दर्दनाक तकलीफ में मरने देना चाहते हैं।

सभी विरोधी धार्मिक नहीं हैं। अजीबोगरीब रॉयल कॉलेज ऑफ साइकियाट्रिस्ट्स है। हालांकि बिल में रोगियों को दिमागी रूप से मजबूत होने की जरूरत होती है। सांसदों को याद दिलाता है कि अंतिम चरण की बीमारी आत्महत्या के लिए जोखिम वाली है। यह बिल या विधेयक तो पास हो गया है, लेकिन इसमें सुधार करना होगा और सरकार को भरोसा दिलाना होगा कि करुणा से समझौता न हो, कमजोर लोगों को न छोड़ा जाए। देखभाल और सम्मान के मूल्य जीवन के अंतिम चरण में उन लोगों की मदद करने के लिए पूरी तरह से बचा कर रखे हों।